रजिस्ट्री सं. डीएल—33001/2001 REGISTERED No. DL—33001/2001

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं॰ 15] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 14, 2001 (चैत्र 24, 1923)
No. 15] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 14, 2001 (CHAITRA 24, 1923)

GOVERNMENT OF INDIA

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I--खण्ड-1--(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालयों द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	309
भाग I--खण्ड-2--(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालयों द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	303
भाग I--खण्ड-3--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	3
भाग I--खण्ड-4--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	377
भाग II--खण्ड-1--अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II--खण्ड-1क--अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II--खण्ड-2--विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II--खण्ड-3--उप खण्ड (i)--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II--खण्ड-3--उप खण्ड (ii)--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II--खण्ड-3--उप खण्ड (iii)--भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II--खण्ड-4--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग III--खण्ड-1--उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	1547
भाग III--खण्ड-2--पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस	249
भाग III--खण्ड-3--मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	*
भाग III--खण्ड-4--विधिक अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	2487
भाग IV--गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	73
भाग V--अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक	*

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	309
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	303
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	3
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc of Government Officers issued by the Ministry of Defence	377
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi languages of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules including Orders, Bye-laws, etc of general character issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	1547
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	249
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications Orders Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	2487
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	73
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc both in English and Hindi	

भाग I—खण्ड 1
[PART I—SECTION 1]

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 29 मार्च 2001

सं. 52-प्रेज/2001--राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को "उत्तम जीवन रक्षा पदक" पुरस्कार प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं।

1. श्री थांगलिआना (मरणोपरांत)
   सेथलून लुंगलेई,
   मिजोरम

13.5.2000 को 8 वर्षीय मास्टर लालनंटलुआनगा दुर्भाग्यवश एक दुकान की लोहे की नालीदार चादरों में आ गए करंट की लपेट में आ गया। करंट के धक्के से वह जमीन पर गिर पड़ा तथा बेहोश हो गया। परन्तु वह अभी भी करंट की लपेट में था। घटना स्थल पर लोग एकत्र हो गए थे। श्री थांगलियाना उसे बचाने के लिए आगे आया तथा बिजली का करंट लगने के खतरे की परवाह न करते हुए उसने बच्चे को टांग पकड़कर उसे बिजली के करंट की पकड़ से निकालने के लिए खींचा। तथापि, वह भी लोहे की दीवार में बहते तेज बिजली के करंट की गिरफ्त में आ गया और बेहोश हो गया। वहां पर एकत्र हुए लोगों ने एक सूखे बांस की सहायता से दोनों को तत्काल करंट की गिरफ्त से अलग किया तथा उन्हें समीप के सिविल अस्पताल में दाखिल करवाया। डाक्टर थांगलिआना को बचा नहीं सके और उसे मृत घोषित कर दिया। मास्टर लालनंटलुआनगा ठीक हो गया तथा उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

2. श्री थांगलिआना ने एक बच्चे को बिजली के करंट से बचाने में उत्कृष्ट साहस, बहादुरी तथा तत्परता का परिचय दिया तथा इस कार्रवाई में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

2. श्री शंकर पिल्लै बी.ओ.ई.एम. सं. जी एस-166112
   484, आर.एम.पी.एल. (जी.आर.ई.एफ.) केयर 70 आर.सी.सी.
   (जी.आर.ई.एफ.) द्वारा 56 ए.पी.ओ.

17.5.2000 को स्टींगरी हैलीपैड से एक चीता हैलीकॉपटर प्रात: 11.09 बजे सी.ई.ब्रि. बी.एम. बख्शी तथा कमांडर 38 बी.आर.टी.एफ. श्री एस. एस. पोरवाल को लेकर हवाई रेसी के लिए उड़ा था। डेट जैडजैडबार से यह जानकारी मिलने पर कि डेट जैडजैडबार तथा बारालाचला (कि.मी. 191 पर) के बीच हैलीकॉपटर दुर्घटनाग्रस्त हो गया है एक अन्य हैलीकॉपटर, जिस पर विंग कमांडर चन्द्रसिंह, फ्ला.लेफ. भुसाल तथा कैप्टन विशाल श्रीवास्तव (आर एम ओ) सवार थे, ने दुर्घटनाग्रस्त हैलीकॉपटर की तलाश में स्टिंगरी से उड़ान भरी। बाद में पता चला कि पहले हैलीकॉपटर पर सवार सभी यात्री इस तथ्य के बावजूद भी सकुशल थे कि यह दुर्घटनाग्रस्त होकर जमीन पर गिरा पड़ा था। इसी बीच, आफीसर कमांडिंग आर.सी.सी. के नेतृत्व में भी एक बचाव दल पहले हैलीकॉपटर की खोज में सड़क मार्ग से निकल पड़ा था। डेट जैडजैडबार पहुंचने पर उन्हें पता चला कि स्टिंगरी से बचाव कार्य के लिए उड़ा हैलीकॉपटर बारालाचला से लौटने के नियत समय बीत जाने के बाद भी बारालाचला घाटी से नहीं लौटा था।

2. आफीसर कमांडिंग 70 आर.सी.सी. के नेतृत्व में ओ.ई.एम शंकर पिल्लै बी. खोज अभियान पर निकल पड़े। उन्होंने टाटा 407 वाहन लिया तथा कि.मी. 191 पर बारालाचला घाटी पहुंच गए। दुर्घटनाग्रस्त हैलीकॉपटर सड़क से लगभग 500 मी. दूर बर्फ से ढका नजर आया। ओईएम शंकर पिल्लै बी. तत्काल दुर्घटना स्थल की ओर दौड़ पड़े। दुर्घटना स्थल तक पहुंचने के लिए उसे कमर तक गहरी बर्फ से होकर गुजरना पड़ा और बचाव दल के अन्य व्यक्ति भी उसके पीछे पहुंच गए। दुर्घटनाग्रस्त हैलीकॉपटर के पास पहुंचने पर उन्होंने देखा कि पायलट फला. लेफ. भुसाल तथा कैप्टन विशाल श्रीवास्तव गंभीर रूप से घायल हैं तथा दुर्घटनाग्रस्त हैलीकॉपटर में फंसे हुए हैं। विंग कमांडर चन्द्र सिंह को मृत पाया गया।

3. ओ.ई.एम. शंकर पिल्लै बी. ने फ्ला. लेफ्ट. भुसाल तथा श्रीवास्तव को हैलीकॉपटर के अन्दर से निकालने के लिए शावल से हैलीकॉपटर के चारों ओर की बर्फ को काटा। हैलीकॉपटर को बड़ी कठिनाई से काटकर खोला गया और कैप्टन विशाल श्रीवास्तव तथा फ्ला. लेफ्ट. भुसाल को बाहर निकाला गया और सड़क तक लाया गया। तदुपरांत कैप्टन विशाल श्रीवास्तव चोटों के कारण मर गए, परन्तु फ्ला. ले. भुसाल बच गए तथा अस्पताल जाकर ठीक हो गए। विंग कमांडर चन्द्र सिंह का शव भी सड़क तक लाया गया। इस पूरी कार्रवाई के दौरान ओ ई एम शंकर पिल्लै कमर तक बर्फ में थे । घाटी में वायु हमेशा तीव्र गति से बहती है तथा तापमान शून्य से नीचे था। इस पूरे अभियान में लगभग तीन घंटे का समय लगा।

4. ओ.ई.एम. शंकर पिल्लै बी. ने अदम्य साहस, सूझबूझ तथा कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया और हैलीकॉपटर दुर्घटना में एक व्यक्ति की जान बचाई।

3. मास्टर लालनिलिआना (मरणोपरान्त)
   द्वारा श्री बियाक माविया लालपुइटलांग
   डाक. रामलुन-796012
   थाना बौंगकौंग-आइजौल, मिजोरम

24.10.99 को मा. लालनिलिआना अपने मित्रों के साथ खेल रहा था। जब उसने कुछ अन्य बच्चों के नजदीक ही खेलने की आवाज सुनी तो वह उस स्थान पर पहुंचा जहां से आवाजें आ रही थीं। घटना स्थल पर पहुंचने पर उसने देखा कि लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के जलाशय में बच्चे खेल रहे थे। अचानक उसने देखा कि उनमें से एक बच्चा मा. जोनाथन लालहुलियाना पानी में डूब रहा था। मा. लालनिलिआना अपनी जान की परवाह न करते हुए तत्काल जलाशय में कूद पड़ा तथा उसने

मास्टर जोनाथन को ऊपर खींच लिया। फिर अन्य बच्चों ने मास्टर जोनाथन को जलाशय से बाहर निकाल लिया। अचानक जलाशय में तेजी से पानी आना शुरू हो गया और यद्यपि लालनिलिआना ने भरसक प्रयास किया परन्तु वह जलाशय से बाहर नहीं आ सका और अपने प्राण त्याग दिए।

2. मास्टर लालनिलिआना ने एक बच्चे को डूबने से बचाने में साहस, बहादुरी तथा तत्परता का परिचय दिया तथा इस कार्रवाई में अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

4. मास्टर मुकेश कुमार,
द्वारा श्री पन्नालाल, निवासी थाथरी,
डाक एवं तहसील-थाथरी
जिला डोडा-182203 (जम्मू एवं कश्मीर)।

5. मास्टर सुनील सिंह,
द्वारा श्रीमती नीम बंती,
ग्राम लिओथा (नंदना) डाक एवं तहसील-थाथरी,
जिला डोडा-182203 (जम्मू एवं कश्मीर)।

19.7.1999 को सायं 9.30 बजे लगभग 40 सशस्त्र आतंकवादियों ने डोडा जिले के लिओथा ग्राम पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने ग्रामीणों पर व ग्राम सुरक्षा समिति के सदस्यों पर स्वचालित हथियारों व हथगोलों से हमला कर दिया। इस आक्रमण में 15 आदमी मारे गए तथा अनेक घायल हो गए। मास्टर सुनील सिंह तथा मास्टर मुकेश कुमार ने आतंकवादियों का मुकाबला करने का निर्णय लिया। मुकेश कुमार ने अपने मृत पिता की बंदूक तथा सुनील सिंह ने अपने भाई की राइफल ली। उन्होंने आतंकवादियों को कई घंटों तक भीषण लड़ाई में उलझाए रखा। इन दोनों लड़कों के साथ लड़ाई में एक आतंकवादी मारा गया तथा अनेक घायल हो गए। लड़ाई 20 जुलाई, 2000 को प्रातः 9 बजे तक चलती रही। तत्पश्चात् आतंकवादी भाग गए।

2. मास्टर मुकेश कुमार तथा मास्टर सुनील सिंह ने आतंकवादियों के साथ लड़ने में अनुकरणीय साहस तथा बहादुरी का परिचय दिया तथा अपनी जान को जोखिम में डालते हुए अनेक ग्रामीणों की जीवन की रक्षा की।

बरुण मित्रा
राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 53-प्रेज/2001--राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को जीवन रक्षा पदक प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :--

1. श्री नारायण श्रीनिवास रेड्डी,
द्वारा श्री नरसी रेड्डी
डा. रविवारी गुडा, मुख्य डा. वेमुलापल्ली (एम.) पिन 508917,
नलगोण्डा जिला, आन्ध्र प्रदेश

2. श्री नारायण सुधाकर रेड्डी,
सु. श्री रंगा रेड्डी,
डा. रविवारी गुडा, मुख्य डा. वेमुलापल्ली (एम.) पिन 508217
नलगोण्डा जिला, आन्ध्र प्रदेश

22-11-1999 को दोपहर लगभग 1 30 बजे श्रीमती खम्मानपति सवितरामा अपनी दो पुत्रियों कुमारी पद्मा तथा कुमारी विजय कुमारी के साथ आत्महत्या करने का फैसला कर फिल्म देखने के बहाने नलगोण्डा स्थित अपने घर से निकल पड़ी। वे एक बस में चढ़ गईं तथा शाम को लगभग 4.00 बजे वेमुलपल्ली में उतर गईं। वहां से वे नहर को जाने वाली सड़क के रास्ते पैदल-पैदल सतुपल्लम ग्राम स्थित नागार्जुन सागर लेफ्ट कनाल ब्रिज पर पहुंच गईं। उन्होंने आत्महत्या संबंधी पत्र लिखकर तथा इसे नहर के बंद पर रख कर आत्महत्या के इरादे से मुख्य नहर में छलांग लगा दी। श्री एन. श्रीनिवास रेड्डी तथा श्री एन. सुधाकर रेड्डी जो वहां से गुजर रहे थे, ने इस घटना को देखा। वे तत्काल नहर में कूद गए और तेजी से तैरकर पानी के तेज प्रवाह में बहती हुई उन तीनों महिलाओं को खींचकर ले आए। इस प्रकार इन दोनों लडकों ने 20 फीट गहरे पानी वाली नहर के तेज बहाव में अपनी जान को जोखिम में डालते हुए मां व उनकी दो पुत्रियों की जान बचा ली।

2. श्री नारायण श्रीनिवास रेड्डी तथा श्री नारायण सुधाकर रेड्डी ने मां व दो पुत्रियों को डूबने से बचाने में अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए साहस व सूझबूझ का परिचय दिया।

3. श्री हरगुन भाई (मरणोपरान्त)
एस आई एक्स-86
न्यू जनता वार्ड, 2/बी. आदिपुर,
कच्छ।

24-07-2000 को 5 सशस्त्र लुटेरों ने कच्छ एक्सप्रेस ट्रेन में हथियारो के बल पर लूटपाट शुरू कर दी। उसी ट्रेन में यात्रा कर रहे श्री हरगुन भाई लखवानी ने लुटेरों को रोकने की कोशिश की तथा सह-यात्रियों की जान बचाई। परन्तु ऐसा करते हुए उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी।

2. श्री हरगुन भाई ने सह-यात्रियों की जान बचाने में साहस व वीरता का परिचय दिया और ऐसा करते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

4. श्री संदीप अरोड़ा (मरणोपरान्त)
दुकान और प्लाट सं. 5,
हूडा शापिंग काम्पलैक्स, रोहतक।

29-08-2000 को बाबा मस्तनाथ इंजीनियरिंग कालेज, रोहतक के तृतीय वर्ष के छात्र, श्री संदीप अरोड़ा, अपनी नियमित कक्षाओं में पढ़ाई के पश्चात् वापस अपने घर जा रहे थे। रास्ते में उन्हें पता चला कि उनके कालेज के कुछ छात्र जवाहर लाल नेहरू नहर में स्नान कर रहे हैं। घटना के समय नहर में बहुत अधिक पानी बह रहा था। नहर 8-1/2 फीट गहरी थी और उसमें तेजी से पानी बह रहा था। श्री संदीप अरोड़ा तथा उनका मित्र श्री रजत राज नहर के किनारे पर बैठ गए। उन्होंने देखा कि उन लडकों में से एक, जो संदीप का मित्र था, नहर में डूबने लगा। श्री रजत राज तत्काल उसे बचाने के लिए नहर में कूद पड़े। तथापि, उस लड़के को बचाते समय वह स्वयं डूबने लगे। हालांकि श्री संदीप तैरना नहीं जानते थे, फिर भी वह नहर में कूद गए। उन्होंने उस डूबते हुए लड़के को बचा लिया और उसके पश्चात् अपने मित्र रजत राज को बचाने का प्रयास किया। किन्तु दुर्भाग्यवश वह नहर में फिसल गए और दोनों ही डूब गए। नहर के गेट बंद करने के बाद जिला प्राधिकारियों ने दोनों के शव बाहर निकाले। श्री संदीप अरोड़ा एक लड़के की जान बचाने में सफल हुए किन्तु ऐसा करते हुए उन्होंने स्वयं अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।

2. श्री संदीप ने एक लड़के के प्राण बचाने में अत्यन्त साहस का परिचय दिया किन्तु इस कार्य के दौरान अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

5. श्री ध्यान सिंह
गांव हथौंन,
डाकघर व तहसील कण्डाघाट,
जिला-सोलन (हिमाचल प्रदेश)

दिनांक 17-07-2000 को जब भारी वर्षा हो रही थी, गवर्नमेण्ट हाईस्कूल, गुग्गाघाट, जिला सोलन, की चार छात्राएं, कुमारी सुनीता, कुमारी पूनम, कुमारी रेखा और कुमारी ऊषा घर लौट रहीं थीं। स्कूल से कुछ मीटर की दूरी पर वे एक विशाल भू-स्खलन में फंस गई जो पहाड़ी के पास से चुपचाप हो रहा था। इन लड़कियों के पीछे आ रहे अन्य बच्चों की चीख पुकार सुनकर पी ई टी, श्री ध्यान सिंह तत्काल स्कूल से दौड़ते हुए आए और उन लड़कियों के जो गर्दन तक मलबे में दबी हुई थीं, प्राणों को बचाने के लिए अपने प्राणों की परवाह न करते हुए गन्दले मलबे में कूद पड़े और उन्होंने तुरन्त एक-एक करके चारों लड़कियों को निकालकर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। इस कार्यवाही में श्री ध्यान सिंह अपने कपड़े, जूते तथा पैसे तक खो बैठे। उन्होंने चारों लड़कियों को अस्पताल पहुंचाया तथा उस समय तक उनके पास रहे जब तक कि वे चारों घटना के सदमें से उबर नहीं गईं।

2. श्री ध्यान सिंह ने अपनी जान की परवाह किए बिना चार बच्चों के प्राण बचाने में तत्परता, साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

6. श्री मनोहर लाल
ग्राम-भागरवान,
डाकघर-डढोल, तहसील घुम्हारवीं
जिला-बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश)

29-07-1999 को कुमारी शशि किरन, जो अपने भाई और बहन के साथ रोहल खुड़ को पार कर रही थीं, फिसलकर उसमें गिर गईं। खुड की चौड़ाई 5-6 फीट थी तथा उस समय तेजी से बह रहे जल की गहराई 8-9 फीट थी। श्री मनोहर लाल अपनी जान की परवाह किए बिना लड़की को बचाने के लिए खुड में कूद पड़े। तेज बहाव के कारण वह तीसरे प्रयास में उस लड़की को बचाने में सफल हुए तथा उसे बेहोशी की हालत में किनारे पर ले आए। इस प्रकार उन्होंने एक लड़की की जान बचाई।

2. श्री मनोहर लाल ने अपने प्राणों को जोखिम में डालते हुए एक लड़की के प्राण बचाने में तत्परता तथा शौर्य का परिचय दिया।

7. श्री राम प्रकाश
ग्राम-धारोती, डाकघर टिक्कर,
उप-तहसील टिक्कर, जिला शिमला (हिमाचल प्रदेश)

20-07-1999 को भारी वर्षा के कारण सरेन्द्राली खुड पर बना पुल बह गया था। मास्टर सुभाष, पुत्र श्री शान्ति बहादुर, जो स्कूल जा रहा था, खुड को पार करते समय अचानक आई बाढ़ के तेज प्रवाह में फंस गया। घटना के समय बहते हुए पानी की गहराई 6-7 फीट थी। श्री राम प्रकाश मास्टर सुभाष की जान बचाने के लिए अपनी जान की परवाह किए बगैर लगभग 15 मीटर से खुड में कूद पड़े। उसकी जान बचाते हुए वह स्वयं बुरी तरह घायल हो गए।

2 श्री राम प्रकाश ने अपने प्राणों को जोखिम में डालते हुए बच्चे की जान बचाने में अत्यधिक साहस और तत्परता का परिचय दिया।

8. श्री सुदर्शन (मरणोपरान्त)
डॉ. नरसिंह जी, भाट, कनाबू
पेरूवेज गांव सुलैया तालुक,
दक्षिण कन्नड़, कर्नाटक

दिनांक 19-04-1998 को लगभग 13.00 बजे धारवाड़ के दत कॉलेज के विद्यार्थी सर्स तालुका के शिव गंगा जल प्रपात पर पिकनिक मनाने के लिए गए थे। जब विद्यार्थी शिव गंगा जल प्रपात के किनारे पर आराम कर रहे थे, तभी उनमें से एक विद्यार्थी कुमारी गीता कामत, उम्र 21 वर्ष, दुर्घटनावश तालाब में गिर गई। इस तालाब की लम्बाई चौड़ाई लगभग 75×100 फुट थी तथा यह 40×50 फुट गहरा था। तब 22 वर्षीय सहपाठी श्री सुदर्शन गोपाल कृष्ण भट्ट जो तैरना जानते थे, तत्काल तालाब में कूद पड़े और कुमारी गीता को पकड़ लिया और बड़ी कठिनाई से उसे जल प्रपात के किनारे के ऊपर निकाल लाए और इस प्रकार अकेले ही उसके प्राण बचाए। तथापि इस कार्यवाही के दौरान वह स्वयं जलधारा में फंस गए तथा तालाब में डूबकर अपने प्राण गंवा बैठे।

2. श्री सुदर्शन ने एक सहपाठी की जान बचाने में अत्यधिक शौर्य और तत्परता का परिचय दिया और इस दौरान अपने प्राणो का सर्वोच्च बलिदान किया।

9. श्री प्रशान्त के. (मरणोपरान्त)
नानामपुविला वाडाक्काथिल,
प्रशान्त भवन, कारिक्कोडुचेरी, कांडाचिरा,
मांगाडू डाकघर

07-02-1998 को, एग्रिकल्चरल इंजीनियरिंग के प्रथम वर्ष के छात्र, श्री प्रशान्त अपने कालेज के साथियों के साथ भारतपूझा नदी में नहाने के लिए गए। श्री प्रशान्त, जो तैरना नहीं जानते थे, नदी के किनारे पर खडे रहे, जबकि उनके साथी श्री येशूदास और श्री सकारिया नदी में नहाने के लिए चले गए, जहां पर नदी 100 मीटर चौड़ी तथा 2 मीटर गहरी थी। नहाने के बाद, दोनों मित्र नदी के किनारे की ओर तैरने लगे। तथापि श्री येशूदास नदी के अन्त:प्रवाह के कारण जहां पानी का स्तर लगभग 3 मीटर गहरा था, पानी में डूबने लगे। उस समय श्री प्रशान्त अत्यधिक साहस और सूझबूझ के साथ नदी में कूद पड़े और अपने मित्र येशूदास को डूबने से बचा लिया। तथापि, दुर्भाग्यवश, वे स्वयं अन्त: प्रवाह में फंस गए और डूब गए। एक मछुआरा उस जगह पर दौड़ा हुआ आया और उसने श्री प्रशांत के शव को बाहर निकाला।

2. श्री प्रशान्त ने अपने मित्र के प्राण बचाने में अत्यधिक साहस और सूझबूझ का परिचय दिया और इस दौरान अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान दिया।

10. श्री वी. पी. विजयन,
सुपुत्र संथाकुमारी, पारामेल टी शाप,
मयन्नुरकावू के समीप, पो. आ. मयान्नूर,
उट्टाप्पलम, त्रिचूर जिला, केरल

02-03-1999 को मयान्नूर स्थित सैंट थॉमस हाईस्कूल के दो छात्र अपने स्कूल के समीप भारतपूझा नदी में परीक्षा के बाद अपने हाथ-पैर

धोते समय गिर गए। उस क्षेत्र में नदी की चौड़ाई लगभग 100 मीटर और जल की गहराई 25 फुट है। श्री विजयन, जो उस समय नदी के एक किनारे पर नहा रहे थे, डूबते हुए छात्रों की चीख-पुकार सुनकर घटनास्थल पर पहुंचे। उन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए उन्हें एक-एक करके बचा लिया।

2. श्री विजयन ने, जो 10वीं कक्षा के छात्र हैं, अपने जीवन की परवाह न करते हुए दो लड़कों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया है।

11. श्री विजीश एम. जी.
मनथानात्तू वीडू, परियारम पो. आ.,
कादमुरी, कोइयाम, पिन-686021

04-04-1999 को, श्रीमती कुंजुमोल इत्तिमणि पुल के समीप कुडूर नदी में स्नान कर रहीं थीं। अचानक ही वह लहर की चपेट में आ गई और नदी के गहरे हिस्से में पहुंच गईं। वह डूबने लगी और सहायता के लिए पुकारने लगी। नदी की गहराई लगभग 13 फुट थी और खतरनाक थी। उस समय श्री विजीश जो नदी की दूसरी तरफ स्नान कर रहे थे, घटनास्थल की ओर दौड़े और अपने जीवन को खतरे की परवाह न करते हुए नदी में कूद पड़े। वह घटनास्थल की ओर तैरकर गए और डूबती हुई महिला को सहायता देकर किनारे पर ले आए। वह बेहोशी की हालत में थी। श्री विजीश ने उसे प्राथमिक सहायता प्रदान की। बाद में उसे समीप के एक अस्पताल में दाखिल कराया गया। उसकी जान बच गई।

2. श्री विजीश ने डूबती हुई महिला की जान बचाने में अदम्य साहस और बहादुरी का परिचय दिया।

12. मास्टर जमशीद कुरीक्कल,
सुपुत्र उम्मेर कुरीक्कल, पाड़ापुरथ हाऊस,
थुरक्कल, माजेरी-676121
मालापुरम जिला, केरल

26-12-1999 को मास्टर रमीस, आयु 6 वर्ष और मास्टर नौफल, आयु 7 वर्ष नामक दो बच्चे मंजेरी के समीप तुरक्कल स्थित मस्जिद के तालाब में फिसलकर गिर गए। इस घटना के समय तालाब में पानी का जल स्तर 4 मीटर था। उनके एक मित्र ने इस घटना की जानकारी समीप ही घर में रह रहे श्री पाड़ापुरथ उम्मेर कुरीक्कल को दी। मास्टर जमशीद कुरीक्कल, जो 9वीं कक्षा का विद्यार्थी था इस घटनास्थल पर पहुंचा और बिना किसी भय के तालाब में कूद पड़ा और मास्टर नौफल को तालाब से बाहर निकाल लाया। उसे फिर पता चला कि एक और लड़का तालाब में है। वह दोबारा तालाब में कूदकर मास्टर रमीस को भी बचा लाया। तब तक स्थानीय लोग भी एकत्र हो गए थे, जो बच्चों को मंजेरी स्थित जिला अस्पताल, में ले गए जहां उन्हें भर्ती करवाया गया। तीन दिन पश्चात् उनको छुट्टी दे दी गई।

2. मास्टर जमशीद ने दो बच्चों को डूबने से बचाने में साहस, बहादुरी और तत्परता का परिचय दिया।

13. मास्टर अशरफुददीन ओ. एम.
सुपुत्र ओ. बी. मुहम्मद, ओलीछालिल हाऊस,
चेरूवत्तूर, पो. आ. कोठामंगलम,
अर्नाकुलम जिला, केरल।

15-07-1998 को 16 वर्ष की आयु की कुमारी बेनजीर नामक लड़की गांव में एक पानी से भरे तालाब में स्नान कर रही थी। यह तालाब 5 मीटर लम्बा, 4 मीटर चौडा और 3.10 मीटर गहरा है। अचानक ही वह तालाब मे गिर गई। कुमारी सलीना और कुमारी राहत नामक दो अन्य लड़कियां, जो वहां पर स्नान करने आई थीं, तालाब में कूद पडीं और कुमारी बेनजीर को बचाने का प्रयत्न करने लगीं। तथापि तीनों ही लडकिया तालाब मे डूबने लगीं। कुमारी रूबी नामक एक अन्य लड़की ने इस करुण दृश्य को देखा और उसने महायता के लिए किसी को पुकारा। मास्टर अशरफुददीन, जो आसपास ही था, ने उस आवाज को सुना और वह अपने जीवन की परवाह किए बगैर ही तालाब में कूद गया। उसने अकेले ही एक एक करके तीनों लड़कियों को बचा लिया। मास्टर अशरफुददीन तैरना जानता था। हालांकि इस घटना के समय मात्र 11 वर्ष का ही था।

2 मास्टर अशरफुददीन ने अपने जीवन को खतरे मे डालकर तीन लड़कियों को डूबने से बचाने मे माहस व बहादुरी का परिचय दिया।

14 श्री बाबू पी.
पंडारापरम्ब हाऊस, पुथियारा पो. आ.,
कोजिकोड-4, केरल

15. श्री मसूद पी. पी.,
अलीफ, 27/1359, कोल्लेरीपरम्ब,
पुथियारा पो. आ., कोजिकोड-4, केरल

20-02-1999 को, पुशियारा, कोजिकोड के समीप कल्लूथान काडावू में एक हाथी सार्वजनिक सड़क पर हिंसक हो गया जिससे लोग भयभीत हो गए और वाहनों का आना-जाना रुक गया। उस हाथी की देखभाल करने वाले दो महावत भरसक प्रयास करने के बावजूद भी उस पर नियन्त्रण पाने में असफल रहे। उस इलाके के लोग भयभीत होकर इधर-उधर भागने लगे। इस मौके पर, श्री बाबू, आटो रिक्शा चालक तथा श्री मसूद एक ट्रोमा केयर वर्कर, इस घटनास्थल पर पहुंचे। हालांकि वहां पर काफी लोग एकत्र हो गए थे किन्तु ये दोनों व्यक्ति ही हिंसक हाथी को काबू करने के लिए बहादुरी के साथ आगे आए। बडे साहस और बहादुरी के साथ हिंसक हाथी के पास गए, उसके गले में रस्सी डाली और उसे एक पेड़ के साथ बांध दिया। इन दोनों स्थानीय लोगों ने इस हिंसक हाथी द्वारा मानव जीवन व सम्पत्ति को पहुंचाए जा सकने वाले सम्भावित खतरे को समय रहते साहसपूर्वक तरीके से टाल दिया।

2. श्री बाबू और श्री मसूद ने सार्वजनिक जीवन और सम्पत्ति को हाथी के हमले से बचाने के लिए अदम्य साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

16. मास्टर के. के शिबिन,
सुपुत्र श्री करप्पाकुट्टी कृष्णन करियादान हाऊस,
छेंबूर पो. आ. त्रिचूर जिला, केरल।

01-01-2000 को श्रीमती कमला की रसोई के छप्पर में हवा के कारण आग लग गई। उस समय कमला की 5 वर्षीय पुत्री अखिला और डेढ़ वर्षीय पुत्र निखिल घर के भीतर सो रहे थे। मास्टर के के शिबिन, अपने घर से बाहर उस जलते हुए मकान के पास से स्नान करने जा रहा था। उसने आग जलते हुए देखी। वह शीघ्र ही जलते हुए घर में घुस गया और अपने जीवन की परवाह न करते हुए अकेले ही जलते हुए घर से दोनों बच्चों को बचा लाया। अग्नि इतनी भयंकर थी कि उसकी लपटे छप्पर की छत से 4 मीटर ऊंची उठ रहीं थीं और सारा घर थोडी देर मे ही जलकर भस्म हो गया।

2. मास्टर के. के. शिबिन ने अग्निकाण्ड से दो बच्चों की जान बचाने में अदम्य साहस, बहादुरी और तत्परता का परिचय दिया।

17. श्री कनडप्पन कट्टिल शाजी,
सुपुत्र अप्पूनी, पुन्नमना,
पो. आ. मंगलम पिन-676561, केरल

07-10-1998 को जब के. एच. एम. एच. एस. आल्थियूर हाई स्कूल में खेलकूद समारोह चल रहा था तभी उस स्कूल का एक 10वीं कक्षा का छात्र थोय्यत्तिल मोहम्मद फैजल अचानक ही पास के कुंए में गिर पड़ा। आवाज सुनने पर काफी छात्र और मूल निवासी उस घटनास्थल पर पहुंचे किन्तु कोई भी कुंए में कूदने का साहस न कर सका। घटना के समय कुंए के जल की गहराई 7 मीटर थी। उस समय खेल देख रहा श्री कनडप्पन कट्टिल शाजी घटनास्थल की ओर दौड़ पड़ा और कुंए में कूद गया क्योंकि वह तैरना जानता था। उसने अकेले ही लड़के को कुंए से बाहर निकाला और उसकी जान बचाई।

2. श्री कनडप्पन कट्टिल शाजी ने अपनी जान की परवाह न करते हुए समय पर साहसपूर्ण कार्य करके लड़के को डूबने से बचाया।

18. कुमारी लेजी,
विल्लयिल वीडु, पलायमबन्नू
आइरूर, तिरूअनन्तपुरम, केरल

श्रमिक के रूप में कार्य करने वाली श्रीमती ऊषा का 07-07-1999 को अपने पति श्री राजेन्द्रन के साथ झगड़ा हो गया और वह अपने 11 एवं 9 वर्ष के दो बच्चों, कुमारी लेजी तथा मास्टर रेजिन को घर छोड़कर चली गई। पत्नी के घर छोड़ने से दु:खी उसके पति श्री राजेन्द्रन ने दोनों बच्चों को रात्रि में कुंए में फैंक दिया और स्वयं फांसी लगाकर आत्म हत्या कर ली। कुंआ 11 मीटर गहरा था और घटना से समय कुंए में जल का स्तर 3 मीटर था। दोनों बच्चे तैरना नहीं जानते थे किन्तु कुमारी लेजी ने एक हाथ से जल स्तर से बिल्कुल ऊपर की एक सीढ़ी को पकड़ लिया। दूसरे हाथ से अपने भाई मास्टर रेजिन को भी पकड़े रखा और सारी रात (12 घण्टे) कुंए में ही बिता दी। इस प्रकार उसने स्वयं को और अपने भाई को डूबने से बचाया। अगली सुबह समीप से गुजर रहे श्री सुनील नामक एक यात्री ने कुंए के भीतर से दोनों बच्चों की रोने की आवाजें सुनीं। उसने कुंए में एक रस्सी डाली और दोनों बच्चों को रस्सी की सहायता से कुंए के बाहर निकाला।

2. कुमारी लेजी के साहसपूर्ण कार्य और सूझबूझ ने अपनी और अपने भाई की जान बचाई।

19. श्री साबू एम.
सुपुत्र मुहम्मद हनीफ मणिकान्तनट्टायादू वीडु,
ईयायकुलम, पाराकोडे, पो. आ. आदूर,
पठानमथिट्टा जिला, केरल

06-12-1999 को एझामकुलम गांव के श्री बाबूराज की साढ़े तीन वर्षीय पुत्री कुमारी श्रीकन्या अपनी मां के पास से भागकर घर के पास स्थित एक कुंए में जा गिरी। कुंआ 50 फुट गहरा, 6 फुट गोल था उसमें घटना के समय लगभग 12 फुट पानी था। इस घटना के घटते ही काफी सारे लोग एकत्र हो गए किन्तु किसी ने भी कुंए में डूबते बच्चे को बचाने का साहस नहीं किया। उसी समय श्री साबू वहां पर आ गए और उन्होंने बच्चे को सुरक्षित निकाल लिया

2. श्री साबू ने अपनी जान की परवाह न करते हुए बच्चे को कुंए में डूबने से बचाने में साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

20. श्री शाजी वर्गीज,
केलीकल वीडु, थम्पामोन,
ग्राम पंचायत, थीक्केक्काडा, पंडालम,
पाठनमथित्ता, केरल

16-07-1999 को श्री पोदियन नामक एक मजदूर करंटयुक्त 11 कि. वा. बिजली की तार के समीप एक टीक के पेड़ की डाल काट रहा था। मजदूर सहित एक डाल अचानक ही बिजली के तारा पर गिर पड़ी। मजदूर को बिजली का करंट लगा और पेड़ की डाल भूतल से 8 मीटर ऊंचाई पर बिजली के तारों पर लटक गई मजूदर बेहोश हो गया जिसका सिर नीचे की तरफ था। उसके पास एकत्र भीड़ बिजली का करंट लगने के भय से कुछ करने का साहस न कर सकी। उस समय श्री शाजी वर्गीज इस दुर्घटनास्थल से गुजर रहे थे। शीघ्र ही उन्होंने पेड़ के ऊपर रस्सी फैंकी और पेड़ पर चढ़ गए तथा बेहोश श्रमिक को रस्सी से बांधा और जमीन पर उतारा। अत: उन्होंने बिजली से पकड़े हुए श्रमिक को अकेले ही लाइन से अलग किया। वहां जमा हुई भीड़ की सहायता से प्राथमिक चिकित्सा देने के पश्चात् पीड़ित व्यक्ति को अस्पताल ले जाया गया जहां वह ठीक हो गए।

2. श्री शाजी वर्गीज ने बिजली के झटके से व्यक्ति के प्राण बचाने में साहस, सूझबूझ और तत्परता का परिचय दिया।

21. श्री शाजु उर्फ एम. आर. साजन,
सुपुत्र श्री राजन, मालिवेक्कल हाऊस,
परियारम पोस्ट आफिस, चलाकुडी (बरास्ता),
त्रिशूर, केरल

20-05-1999 को मार्टिन नाम का डेढ़ साल का बच्चा अपनी बहन के साथ खेलते समय अचानक कुंए में गिर गया। कुंआ 7.50 मीटर गहरा था तथा दुर्घटना के समय उसमें पानी का स्तर 2.50 मीटर था। उसकी बहन सहायता के लिए चिल्लाने लगी। बहन के जोर से रोने की आवाज सुनकर वहां भीड़ इकट्ठी हो गई पर किसी ने कुंए में उतरने का साहस नहीं किया। श्री एम. आर. साजन, जो पास की दुकान से किराने का कुछ सामान खरीदकर अपने घर वापस आ रहा था, ने कुंए के पास कुछ लोगों को खड़े देखा। वह दुर्घटना स्थल पर दौड़ा और कुंए में कूद पड़ा क्योंकि वह तैरना जानता था। वहां इकट्ठे हुए लोगों ने ऊपर से रस्सी फैंकी। उसने बच्चे को पकड़ा और अपनी पीठ पर रखा तब उसने उस कपड़े से बच्चे को बांधा जो वह पहने हुए था और रस्सी के सहारे बाहर आया।

2. श्री एम. आर. साजन ने लड़के को डूबने से बचाने में साहस, तत्परता और बहादुरी का परिचय दिया।

22. श्री थनकप्पन,
नेदुमपल्लिल, पुलियनूर, पाला,
कोट्टायम जिला, केरल

12-09-1998 को श्रीमती कुट्टीयम्मा जेकब, इटेकुन्नेल की पुत्री कुमारी अनीष जेकब लकड़ी के पुल को पार करते समय पुलियान्नूर थोडु (छोटी नदी) में गिर गई। इस दुर्घटना के समय पुल के नीचे जल स्तर लगभग 4 मीटर था। श्रीमती कुट्टीयम्मा जेकब अपनी बच्ची को बचाने के लिए थोडु में कूद पड़ी लेकिन बरसात का मौसम होने के कारण नदी में पानी का स्तर काफी ऊंचा था इसलिए वह उसे बचा न सकी। दोनों ही नदी में डूबने लगे। श्री थनकप्पन ने, जो वहां से गुजर रहे थे देखा कि श्रीमती कुट्टीयम्मा जेकब और उनकी पुत्री कुमारी अनीषा थोडु में डूब रही है। पानी के तेज बहाव की और अपने जीवन को जोखिम की परवाह किए बिना वह थोडु नदी में तत्काल कूद पड़े और श्रीमती कुट्टीयम्मा जेकब और कुमारी अनीषा के प्राण बचाए।

2. श्री थनकप्पन ने अपने जीवन को खतरे में डालकर दो व्यक्तियों को डूबने से बचाने में साहस और बहादुरी का परिचय दिया।

23. श्री ब्रिजेश कुमार चर्मकार,
ग्राम व पो. आ. खिलौनी, बाहिरी पुलिस स्टेशन,
जिला कटनी (मध्य प्रदेश)

20-06-1998 को श्री ब्रिजेश कुमार अपने मित्र, श्री मारुकोल के साथ महुआ एकत्र करने के लिए जंगल में गए। अचानक कुछ भालुओं ने श्री मारुकोल पर हमला कर दिया और उसे बुरी तरह से घायल कर दिया। उसके चिल्लाने की आवाज सुनकर श्री ब्रिजेश कुमार घटनास्थल पर पहुंचे श्री ब्रिजेश कुमार ने बहुत बहादुरी से पत्थर मारकर भालुओं पर हमला किया और उन्हें भागने पर विवश कर दिया। श्री ब्रिजेश कुमार ने श्री मारुकोल के जीवन की रक्षा की और उसे गांव में लाए।

2. श्री ब्रिजेश कुमार ने अपने जीवन को खतरे में डालकर एक व्यक्ति का जीवन बचाने में साहस और बहादुरी का परिचय दिया।

24. श्री परसराम धनंजय सैनिक सं. 292,
गांव सिमर्धा थाना समनपुर,
जिला-डिंडोरी (म. प्र.)

21-06-2000 को, लगभग 5.30 बजे आनंद ट्रैवल की बस नं. सी पी. ए. 4048 उलट गई और समनपुर पुलिस स्टेशन के पास खड्डे में गिर गई। श्री बी. एल. पाण्डे, उप रैंजर, वन समनपुर बस और पैड़ के बीच में फंस गए। वह बुरी तरह से घायल हो गए और इस दुर्घटना में उनके दोनों पैर और हाथ टूट गए: बस नीचे नाले की ओर जाने लगी। श्री परसराम धनंजय जो बस में यात्रा कर रहे थे, तत्काल सक्रिय हो गए। उन्होंने अपनी बेल्ट की सहायता से इस तरह से उन्हें खींचा कि श्री पांडे के जीवन को कोई खतरा नहीं था। इस तरह से श्री परसराम ने श्री पांडे की जीवन की रक्षा की। इस कार्यवाही में, श्री परसराम ने काफी खतरा मोल लिया क्योंकि बस नाले की ओर जा रही थी और वहां श्री परसराम को अपने प्राणों से हाथ धोने अथवा गंभीर चोट लगने की बहुत संभावना थी।

2. श्री परसराम ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए बस दुर्घटना में व्यक्ति के जीवन को बचाने में साहस, बहादुरी और सुझबूझ का परिचय दिया।

25. कुमारी विद्या यादव,
गांव-गांगई, पो. आ. कोयडा,
जिला-रायपुर, मध्य प्रदेश

लगभग साढ़े सात साल की कुमारी विद्या यादव, अपने परिवार के सदस्यों के साथ नदी के किनारे झोपड़ी में रह रही थी।

2. 01-04-2000 को परिवार के बड़े सदस्य पास के वाटरमेलन लान में गए तथा केवल बच्चे ही झोपड़ी में रह गए। अचानक झोपड़ी में आग लग गई। झोपड़ी पूरी तरह से आग की लपटों में आ गई तथा सभी बच्चे उसमें फंस गए। कुमारी विद्या ने अपने जीवन को खतरे में डालकर जलती हुई झोपड़ी में से चार बच्चों को निकाला। जब वह आखरी एक साल के बच्चे को बाहर निकाल रही थी तो घर की जलती हुई छत बच्चे पर गिर पड़ी और उसकी मृत्यु हो गई।

3. कुमारी विद्या ने कम उमर होने के बावजूद चार बच्चों के जीवन को बचाने में अत्यन्त साहस, बहादुरी और तत्परता का परिचय दिया।

26. श्री सत्येन्द्र सिंह कुशवाह,
अमित क्लीनिक, इटावा रोड फूप-477551,
जिला-भिण्ड, मध्य प्रदेश

01-11-1999 को श्री बंशी लाल जैन (75 साल) अचानक 125 फुट ऊंचे पुल से चम्बल नदी में गिर गए। पुल के नीचे पानी की गहराई 60 फीट थी। श्री सत्येन्द्र सिंह कुशवाह ने यह घटना देखी जो अपनी पत्नी मीरा कुशवाह के साथ अपनी मोटरसाइकिल पर मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) से आ रहे थे। उन्होंने पुल के बीच में अपनी मोटरसाइकिल को तत्काल रोका और बिना समय खोए उस व्यक्ति को डूबने से बचाने के लिए नदी में कूद पड़े। उन्होंने डूबते हुए व्यक्ति के प्राणों की रक्षा की और तैरकर उनको नदी के किनारे तक लाए। उन्होंने श्री बंशी लाल जैन को प्राथमिक सहायता भी दी और उपचार के लिए सिविल अस्पताल में ले गए।

2. श्री सत्येन्द्र सिंह कुशवाह ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए वृद्ध व्यक्ति को डूबने से बचाने में अत्यन्त साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

27. श्री सी 35 लालदगलियाना,
बैराबी थाना, कोलासिब जिला,
मिजोरम

28. श्री एच. सी. थंहलीरा,
बैराबी थाना, कोलसिब जिला,
मिजोरम

27-07-2000 की शाम को लगभग 3.00 बजे श्री एच. सी. थंहलीरा और सी 35 लालदगलियाना मिजोरम के कोलसिब जिला के बैराबी पुलिस स्टेशन से लगभग 1 कि. मी. दूर तलांग नदी में मछली पकड़ने और नहाने के लिए गए। नदी में उनसे कुछ आगे तीन बच्चे भी नहा रहे थे। उनमें से एक लालरूनकेला नाम का बच्चा नदी में गिर गया। जब एच. सी. थंहलीरा और सी 35 लालदगलियाना ने सहायता के लिए बच्चों के चिल्लाने की आवाज सुनी तो वे उस स्थान पर दौड़ते हुए गए। जैसे ही लड़का पानी की सतह पर आया उन्होंने लड़के को देख लिया। श्री एच. सी. थंहलीरा डूबते हुए लड़के को बचाने के लिए नदी में कूद पड़े। उन्होंने लड़के को पकड़ा और तैरकर किनारे पर आने लगे। तथापि रास्ते में वह लड़के को संभाल नहीं सके और लड़का गिर गया। तब सी 35 लालदगलियाना नदी में कूद पड़े और दोनों को बचा लिया।

2. श्री लालदगलियाना और श्री एच. सी थंहलीरा ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए डूबते हुए लड़के को बचाने में साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

29. मास्टर लालरामथरा (मरणोपरान्त)
पुत्र श्री टी. मालसवमा,
केफंग, वेंगसांग, मकान नं. 139,
आइजोल जिला, मिजोरम

27-04-1998 को, वेंघलुई स्पोर्टिंग क्लब तमदिल लेक में पिकनिक पर गया और 12 साल का मास्टर लालरामथारा भी इस ग्रुप के साथ था। सुबह लगभग 11.00 बजे जब लड़के और लड़किया लेक के किनारे पर खुशी से नाच गा रहे थे, तो सुश्री आर वनलालहेली अचानक नदी में गिर गई। लेक की लम्बाई आधा कि.मी और 8 से 15 मीटर गहरी थी। इस समय मास्टर लालरामथारा जा पास ही खडे थे, अच्छी तैराकी की वजह से अपने मित्र की जान बचाने के लिए पानी में कूद पड़े। जब मास्टर लालरामथारा डूब रही लड़की के पास पहुचे तो भयभीत लड़की ने उनको पकड़ लिया और उनसे लिपट गई। वह पानी में तैर न सकी और पानी के अन्दर चली गई। जब लेक के किनारे पर खड़े दर्शकों ने महसूस किया कि मास्टर लालरामथारा उसको बचाने में असमर्थ हैं तो उन्होंने उनकी ओर एक बांस का डंडा फैंका। भयभीत लड़की ने बांस के डंडे को पकड़ लिया लेकिन मास्टर लालरामथारा इस कोशिश में इतने अधिक कमजोर हो गए थे कि उनमें डंडे को पकड़ने की हिम्मत नहीं थी। चूंकि किनारे पर खड़े उनके किसी भी मित्र को तैरना नहीं आता था अत: वह सहायता से पूर्व ही डूब गए।

2. अतः मास्टर लालरामथारा ने सुश्री आर. वनलालहेली के जीवन को बचाने के प्रयास में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया।

30. श्री लालरिननुंगा, (मरणोपरान्त)
मोलफेंग, मिजोरम।

25-01-2000 को, श्री वन लालछुंगा और उनके ड्राइवर श्री लालरिननुंगा और श्री थांगा कुछ भार उठाने के लिए तावीह की ओर जा रहे थे। रास्ते में बिजली का खम्बा नजर आया जिसकी पेड़ के गिरने से तार टूट गई थी तथा वह तार सड़क पर पड़ी हुई थी। उन्होंने वाहन को रोका और श्री थांगा तार को हटाने के लिए नीचे उतरे। वह यह नहीं जानते थे कि तार में बिजली का करंट है।

2. ज्योंही श्री थांगा ने तार को छुआ, तो वह झटके के कारण अशक्त हो गए। श्री वनलालछुंगा ने श्री थांगा को तार से अलग करने की कोशिश की लेकिन श्री थांगा के शरीर में प्रवाहित हो रहे करंट ने उन्हें दूर फैंक दिया। तब श्री लालरिननुंगा श्री थांगा की ओर दौड़े और इस डर से कि कहीं करंट के कारण वह फिर से दूर न गिर जाएं वह उससे लिपट गए और उसे छुड़ाने का प्रयत्न करने लगे। हालांकि श्री लालरिननुंगा को भी बिजली के करंट ने पकड़ लिया था किन्तु फिर भी उन्होंने अपने मित्र को नहीं छोड़ा और अन्तिम सांस रहने तक छुड़ाने का प्रयत्न करते रहे।

3. श्री लालरिननुंगा ने अपने मित्र को बचाने के प्रयास में अपने प्राणों की आहुति देकर सर्वोच्च बलिदान दिया है।

31. श्री आर. डी. थनचुंगनुंगा,
सुपुत्र श्री आर.डी. हरंम्मा,
कान्वेंग थिंगडॉल,
कोलासिब जिला, मिजोरम।

श्री आर. डी. थनचुंगनुंगा, वनललबुआना तथा मलसामा नामक अपने दो मित्रों के साथ बांगजाऊ में (कोलासिब जिला, मिजोरम में थिंगडॉल गांव के समीप) अपने झुम में कैम्प में गए थे। छठे दिन अर्थात् 31-07-2000 को वे बैम्बूशूट तथा खाने के लिए प्लेनटेन फ्लावर्स इकट्ठे करने के लिए पास के एक पहाड़ी जंगल में गए। रास्ते में मलसांमा पीछे रह गया क्योंकि वह थका हुआ था, तथा बाकी दो आगे निकल गए। जैसे ही दोनों मित्र बांस के जंगल में आगे बढ़े उन पर एक हट्टे-कट्टे भालू ने अचानक हमला कर दिया। वनललबुआना ने बचाव के लिए जैसे ही भागने की कोशिश की भालू ने उनके बैग के पट्टे पर झपट्टा मारा और उसे दबोच लिया और उसके चेहरे को दो बार खरोंचा। उसे काटने के लिए जैसे ही भालू ने मुंह खोला, श्री वनललबुआना ने अपना मुक्का भालू के मुंह में फंसा दिया जिसे भालू ने काट लिया। इस बीच श्री आर.डी. थनचुंगनुंगा ने अपना धाओं निकाल लिया और भालू को दबोचते हुए भालू के सिर पर अपनी पूरी ताकत से घातक प्रहार किया। जब उसने भालू के सिर पर लगभग सात या आठ बार प्रहार किए तब भालू उसके मित्र को छोड़कर जंगल में भाग गया। तब तक मलसांमा भी अपने मित्रों के साथ मिल चुका था, तथा वह मदद लाने के लिए शीघ्र ही थिंगडॉल गांव की तरफ भागा, जबकि श्री आर. डी. थनचुंगनुंगा अपने मित्र की देखभाल के लिए वहीं रह गए। लगभग 4 से 5 घण्टे के बाद गांव वाले पहुंचे तथा वनललबुआना को एक कामचलाऊ बांस के स्ट्रेचर पर ले गए।

2. श्री आर.डी. थनचुंगनुंगा ने अपनी जान की परवाह न करते हुए एक भालू के हमले से अपने मित्र की जान बचाते हुए विलक्षण बुद्धि एवं शौर्य का परिचय दिया।

32. श्री प्रेम सिंह चंपावत,
सुपुत्र श्री वीरदसिंह चंपावत,
दीदास गांव, तहसील-सिवाना,
जिला बाड़मेर, राजस्थान।

21-05-2000 की सुबह एक जंगली भालू ने दुदादा गांव में प्रवेश किया तथा जोधपुर जिले के दुदादा एवं रामपुरा गांव के 7-8 लोगों को घायल कर दिया। इसके पश्चात् भालू जोधपुर जिला तथा बाड़मेर सीमा पर स्थित दिदास गांव पहुंचा तथा उसने हमला करना एवं गांव वालों में दहशत फैलाना शुरू कर दिया। दिदास गांव के निवासी श्री प्रेमसिंह चंपावत ने अपनी जान की परवाह न करते हुए भालू के साथ लड़ना शुरू कर दिया। बुरी तरह से जख्मी होने के बावजूद भी वे भालू के साथ लड़ते रहे जिसके फलस्वरूप भालू घबरा गया। भालू ने भागने की कोशिश की परन्तु अन्य गांव वालों की मदद से वह श्री प्रेमसिंह द्वारा पीट-पीट कर मार डाला गया।

2. श्री प्रेम सिंह ने भालू के आक्रमण से अधिसंख्य गांव वालों की जान बचाते समय सूझ-बूझ तत्परता एवं अदम्य साहस का परिचय दिया।

33. श्री पुनीत खद्यत (मरणोपरान्त)
गांव एवं पोस्ट आ.-सौंत शिलांग,
जिला पिथौरागढ़ ।

05-09-1998 को श्री पुनीत खद्यत ने अपने सहपाठी श्री जनक सिंह को तालाब में डूबते हुए देखा। आपने तालाब में तुरन्त छलांग लगा कर श्री जनक सिंह की जान बचाई। परन्तु इस दौरान आप खुद तालाब में डूब गए।

2. श्री पुनीत खद्यत ने दूसरों के प्रति चिंता तथा अदम्य साहस का परिचय दिया तथा अपने मित्र को डूबने से बचाया तथा इस प्रक्रिया में अपने प्राणों का बलिदान दिया।

34. श्री अमित कुमार सुपुत्र श्री जसवन्त राम,
न्यू राज भवन, आउट हाऊस,
तल्लीताल, नैनीताल (उत्तरांचल)।

35. श्री बालम सिंह सुपुत्र श्री हीरा सिंह,
न्यू राज भवन, आउट हाऊस,
तल्लीताल, नैनीताल (उत्तरांचल)।

36. श्री प्रकाश टमटा, सुपुत्र श्री देवराम टमटा,
न्यू राजभवन, आउट हाउस,
तल्लीताल, नैनिताल (उत्तरांचल)।

15.11.1999 को शेरवुड कालेज, नैनीताल के 11वीं कक्षा के चार विद्यार्थी लवर्स की चोटी वाले पहाड़ से फिसल गए। इस घटना में श्री अर्पित अग्रवाल की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई तथा एक अन्य श्री सुनीत जोशी गंभीर रूप से घायल हो गया। शेष दो लड़के पहाड़ की संकरी ढलान के बीच में फंस गए।

2. श्री अमित कुमार, श्री बालम सिंह तथा श्री प्रकाश टमटा ने अपनी जान पर खेलकर फंसे हुए लड़कों को बचाया तथा मृत लड़के का शव भी लेकर आए।

3. श्री अमित कुमार, श्री बालम सिंह तथा श्री प्रकाश टम्टा ने अपनी जान पर खेलते हुए दो लड़कों की जान बचाते हुए सूझबूझ ... साहस का परिचय दिया।

37. मास्टर मनीश कुमार यादव,
गांव कनहौली, पो. आ. मुफ्तीगंज,
पुलिस स्टेशन कराकत
जिला जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

17-1-1998 को लगभग 3.30 बजे सायं साढे तीन साल का मास्टर दीप कुमार यादव खेलने के दौरान कुंए में गिर गया। कुएं में जल की गहराई लगभग 18 फुट थी। यह देखकर श्रीमती सुदामा, जो बच्चे के साथ थीं, ने मदद के लिए शोर मचाया तथा अधिसंख्य लोग वहां एकत्रित हो गए। परन्तु डूबते हुए बच्चे को बचाने का साहस किसी ने नहीं दिखाया। इसी बीच मास्टर मनीश कुमार यादव वहां आया और तत्काल ही कुंए में कूद पड़ा। वह डूबते हुए बच्चे को बाहर ले आया तथा उसकी जान बचाई।

2. मास्टर मनीश कुमार यादव ने अपनी जान की परवाह न करते हुए डूबते हुए लडके को बचाने में अदम्य साहस, शौर्य तथा तत्परता का परिचय दिया।

38. कुमारी मंजु आर्य,
गांव भाकुन खोला, पो. आ. बैजनाथ,
जिला बागेश्वर, उत्तर प्रदेश।

4-7-1999 को एस एम बी ग्वाडम यूनिट के सीनियर फील्ड आफीसर श्री लगाया भूटिया तथा उनके सहयोगी रिपोर्टर श्री मिनिकेतन राज ब्रायली जिला बागेश्वर में गोमती नदी में तैर रहे थे। श्री लगाया भूटिया नदी में डूब गए तथा श्री मिनिकेतन राज ब्रायली डूबने लगे। नवीं कक्षा की एक छात्रा कुमारी मंजु आर्य ने श्री मिनिकेतन को डूबने से बचाया। उन्होंने श्री भूटिया को भी बचाने की कोशिश की परन्तु उन्हें बचा नहीं सकी।

2. कुमारी मंजु आर्य ने अपनी जान हथेली पर रखकर एक व्यक्ति की जान बचाने में साहस, शौर्य एवं तत्परता का परिचय दिया।

39. कुमारी विनिता,
गांव-व-पो. आ. परेवा,
जिला चम्पावत, उत्तर प्रदेश।

12.4.1999 को गांव परेवा में श्री भगवान सिंह के छपरैल में भीषण आग लग गई। छपरैल पूरी तरह से खाक हो गया तथा एक बैल जल कर तुरन्त ही मर गया। एक गाय तथा एक बछड़ा गंभीर रूप से जल गए तथा 4.5 दिनों में मर गए। आग ने श्री भगवान सिंह के पड़ोस वाले घर को भी चपेट में ले लिया। इस समय घर में कोई वयस्क आदमी मौजूद नहीं था। वहां 10 वर्ष से कम आयु के छः बच्चे मौजूद थे। उन छः बच्चों में से कुमारी विनिता ने आग की लपटों की परवाह न करते हुए सभी बच्चों को बाहर निकाला तथा उन्हें पास के मैदान में ले गई। इस प्रकार उन्होंने सभी बच्चों की जान बचाई। उन्होंने मदद के लिए शोर भी मचाया। उनकी पुकार सुन कर गांव वाले एकत्रित हो गये तथा आग को बुझाया तथा पड़ोस के घर को जलने से बचाया।

2. कुमारी विनिता ने अपनी जान का जोखिम उठाते हुए अग्निकांण्ड से पांच बच्चों की जान बचाते हुए सूझबूझ, तत्परता एवं साहस का परिचय दिया।

40. मास्टर भारती लाल सेन,
दुर्गा बाजार, बांदे, उत्तर प्रदेश।

8.1.1999 को श्री रामबाबू गुप्ता का डेढ़ साल का लड़का अचानक कुंए में गिर पड़ा। कुंए की गहराई 80 फुट थी। बच्चे की चीख-पुकार सुनकर अधिसंख्य व्यक्ति एकत्रित हो गए परन्तु कुंए में उतरने का साहस कोई न कर सका। उसी समय मास्टर भारती लाल वहां से गुजर रहा था। उसने स्थिति की गंभीरता को तुरन्त ही भांप लिया और अपनी जान की परवाह किए बिना कुंए में उतर गया। वह बच्चे को बाहर लाने में सफल रहा और उसकी जान बचाई। इस प्रक्रिया में मास्टर भारती लाल सेन को कुछ चोटें आईं।

2. मास्टर भारती लाल सेन ने अपनी जान का जोखिम उठाते हुए एक डूबते हुए बच्चे को बचाने में साहस एवं शौर्य का परिचय दिया।

41. मास्टर सुभाष चन्दर,
गांव बाला, पो. आ. खोताली,
जिला चम्पावत।

14.10.1998 की शाम श्री विष्णु दत्त भट्ट के घर में आग लग गई। उस समय घर में कोई वयस्क मौजूद नहीं था। दो बच्चे, मास्टर मनोज 5 वर्ष तथा कुमार नीमा ढाई वर्ष, घर में मौजूद थे। आग को देखकर मास्टर मनोज घर से बाहर आ गया किन्तु कुमारी नीमा बाहर नहीं आ सकी और अन्दर ही फंस गई। इसी दौरान, उनका भाई मास्टर सुभाष चन्दर जंगल से वापस आ गया और उसने देखा कि उसकी बहन घर के अन्दर फंसी हुई है। वह तुरन्त ही घर के अन्दर भागा और अपनी बहन को घर से बाहर निकाल लाया और उसकी जान बचाई।

2. मास्टर सुभाष चन्दर ने अग्नि कांड में अपनी बहन की जान बचाने के लिए साहस, शौर्य एवं तत्परता का परिचय दिया।

42. श्री चेरियाकोया बी. एस.,
स्टैनो टाइपिस्ट, खेल, लक्षद्वीप कार्यालय,
बिल्डिंग आईलैण्ड, कोच्चि-3।

30-4-2000 को कलपैनी आइलैण्ड में एक जहाज में पर्यटकों के चढ़ते समय केरल की एक पर्यटक श्रीमती जैस्सी रपई अचानक जहाज तथा कन्ट्री क्राफ्ट के बीच समुद्र में गिर पड़ीं। उनका जीवन खतरे में पड़ गया क्योंकि वे तैरना नहीं जानती थीं। जबकि अन्य अनेक लोग इस दुर्घटना को देख रहे थे वहीं जहाज पर पर्यटकों के कल्याण की देखभाल करने के लिए प्रबंधक के रूप में अस्थायी रूप से नियुक्त लक्षद्वीप के खेल कार्यालय के श्री चेरियाकोया बिना कोई समय गंवाए समुद्र में कूद पड़े तथा उनकी जान बचाई। एक जहाज तथा अन्य क्राफ्ट के बीच गिरे व्यक्ति को बचाना खतरे का काम है। इस जोखिम के बावजूद श्री चेरियाकोया समुद्र में कूद पड़े तथा अपनी जान की परवाह किए बिना पर्यटक महिला की जान बचाई।

2. श्री चेरियाकोया ने अपनी जान को जोखिम में डालकर एक व्यक्ति को डूबने से बचाने में साहस एवं बहादुरी का परिचय दिया।

43. सब लेफ्टीनेंट ध्रुव के. तिवारी (04862जैड),
आई.एन.एस. मैसूर,
द्वारा एफ. एम. ओ. मुम्बई।

6/7 अगस्त, 2000 की रात्रि को सब लैफ्टिनेंट तिवारी लिस्बन, पुर्तगाल में तटीय नगर भाग को ऊपर से देखते हुए रेस्टोरेण्ट में भोजन कर रहे थे। यू एस एस का एक यू एस नेवी नाविक इवाइड की आजनहावर रैस्टोरेण्ट की खुली हुई खिडकी से पानी में अचानक गिर गए। गिरते हुए नाविक का सिर

एक तरफ खड़ी कर्षनाव से टकराया जिससे वह बेहोश हो गए तथा सिर से काफी रक्त स्राव हुआ। सब लैफ्टिनेंट तिवारी अपनी सुरक्षा की जरा भी परवाह किए बिना तुरन्त हरकत में आ गए तथा रैस्टोरेण्ट के समीप तेज बहाव वाले ठण्डे पानी में कूद पड़े। उन्होंने नदी के तल की ओर जा रहे नाविक को पकड़ लिया तथा उसे सुरक्षित खींच लिया। तत्पश्चात् सब लैफ्टिनेंट तिवारी ने नाविक के सिर से तेज रक्त स्राव को रोकने के लिए उसकी प्राथमिक चिकित्सा की तथा एम्बुलेंस पहुंचने तक उसके पास रहे। यदि सब लैफ्टिनेंट तिवारी ने उस समय बहादुरी नहीं दिखाई होती तो नाविक की जान चली जाती।

2. सब लैफ्टिनेंट तिवारी ने अपनी जान की परवाह किए बिना यू.एस. नेवी नाविक की जान बचाने में साहस एवं सूझबूझ का परिचय दिया।

44. श्री आर. एन. एस. यादव,
सी पी ओ आर (टेल) सं. 112488-एफ.,
आई एन एस कृष्णा,
द्वारा एफ एम ओ कोच्चि।

01 मार्च, 2000 को आई एन एस. कृष्णा फिंगर जैट्टी बर्थ एन के समीप लंगर डाले खड़ा हुआ था। लगभग 8 डाकयार्ड श्रमिक जहाज के हेलोडेक से जेटी में सामान उतार रहे थे। क्रेन चलाते समय एक डाकयार्ड श्रमिक जैट्टी के किनारे से फिसल गया तथा समुद्र में गिर गया। शेष सभी श्रमिक जैट्टी के किनारे पर इकट्ठे हो गए तथा हाथ पैर मारते हुए श्रमिक, जो तैराक नहीं था, को देखने लगे। उनमें से कोई भी समुद्र में कूदने का साहस नहीं जुटा पाया बल्कि वे मदद के लिए चिल्लाने लगे। सहायता के लिए उनकी चीख-पुकार को सुनकर तथा तत्काल वहां पर दौड़कर पहुंचने की आवश्यकता को महसूस करते हुए आर एन यादव, सी पी ओ आर (टेल) अपने गैंगवे से दौड़कर घटनास्थल पर आए। अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना तथा तत्परता दिखाते हुए नाविक समुद्र में कूद पड़ा तथा श्रमिक की जान बचाई। इस पूरी घटना को लैफ्टीनेण्ट अमित नागपाल ने देखा जो घटना के समय आस-पास मौजूद थे।

2. आर एन एस यादव, सी पी ओ आर (टेल) ने डूबने से एक व्यक्ति की जान बचाने में अदम्य साहस एवं सूझबूझ का परिचय दिया।

45. श्री वीरेन्द्र सिंह सिपाही (सं 3996747)
डोगरा स्काउट,
द्वारा 56 ए पी ओ।

02-10-1999 को सायं 6.35 बजे खुद्दी गांव में स्थित बी कम्पनी, डोगरा स्काउट चौकी पर तैनात संतरी ने देखा कि एक घर में आग लग गई है। उसने तत्काल अपने स्थानापन्न कम्पनी कमाण्डर को सूचित किया। एक टीम को घटनास्थल पर भेजा गया। सिपाही वीरेन्द्र सिंह, जो उस दल का सदस्य था, ने 11 वर्षीय साजिद अहमद तथा 6 वर्षीय रसयासित नामक दो बच्चों को जलते हुए मकान में फंसे देखा। आग फैलती जा रही थी तथा ग्रामवासी केवल मूकदर्शक बने खड़े थे। दोनों बच्चों के जीवन के खतरे को भांपकर सिपाही वीरेन्द्र सिंह एक अधिकारी के साथ जलते हुए मकान में घुस गए तथा 40% से 50% तक जल गए दोनों बच्चों को बाहर निकालने में सफल हो गए। इस कार्यवाही में सिपाही वीरेन्द्र सिंह का चेहरा तथा गरदन भी झुलस गए। जल जाने के बावजूद सिपाही ने आग को काबू करने तथा इसे निकटवर्ती सरकारी भवन तक फैलने से रोकने में सक्रिय रूप से भाग लिया।

2. सिपाही वीरेन्द्र सिंह ने अपनी जान को जोखिम में डालकर दो बच्चों की जान बचाने तथा सरकारी सम्पत्ति को नुकसान से बचाने में अत्यधिक बहादुरी का परिचय दिया।

46. श्री केशर सिंह ड्रिलर स जी एम 117885 एल
155 फार्मेशन कटिंग प्लाटून केयर,
116 सड़क निर्माण कम्पनी (जी आर ई एफ)
द्वारा 99 ए पी ओ।

10-07-2000 को लगभग 1300 बजे ड्रिलर केशर सिंह चट्टान को उड़ाने के लिए अपनी मशीन से छेद कर रहा था तभी उसने उस क्षेत्र के प्रभारी (वर्क्स) ओवरसियर मोहन सिंह द्वारा बजाए गए अलार्म की आवाज सुनी। श्री केशर सिंह ने तुरन्त ड्रिलिंग कार्य बंद कर दिया तथा देखा कि ओवरसीयर मोहन सिंह तथा डीइएस कर्ण सिंह लुढ़कते हुए एक विशाल शिलाखण्ड के कारण गहरी घाटी में गिरते जा रहे थे। श्री केशर सिंह ने तुरन्त साथी-श्रमिकों को इकट्ठा किया तथा अपनी जान को जोखिम में डालकर ओवरसियर मोहन सिंह तथा डी ई एस कर्ण सिंह को बचाने के लिए खड़ी चट्टानदार पहाड़ी को, जहां अभी शिलाखण्ड के टुकड़े लुढ़क रहे थे पार करके घाटी की तरफ चले गए। अपनी सुरक्षा की जरा भी परवाह किए बिना श्री केशर सिंह तत्काल घटनास्थल पर पहुंचे तथा कामचलाऊ स्ट्रेचर तैयार किया और खड़ी चट्टानी पहाड़ी पर चढ़कर ओवरसियर मोहन सिंह तथा डी ई एस कर्ण सिंह दोनों को सड़क के किनारे तक ले आए। श्री केशर सिंह द्वारा समय पर बचाव किए जाने से दोनों पीड़ितों को चिकित्सा के लिए हैलीकाप्टर के द्वारा मिलिटरी हास्पीटल दिनजन ले जाया जा सका।

2. श्री केशर सिंह ने अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना दो व्यक्तियों की जान बचाने में साहस, निष्ठा एवं तत्परता का परिचय दिया।

47. श्री मार्टिन बार्जो सी पी एल (टी नं. 55357)
155, फार्मेशन कटिंग प्लाटून केयर,
116 सड़क निर्माण कम्पनी (जी आर ई एफ),
द्वारा 99 ए पी ओ।

10-07-2000 को लगभग 1300 बजे श्री मार्टिन बार्जो सी पी एल चट्टानों को उड़ाने के लिए अपनी मशीन से ड्रिलिंग कार्य में ड्रिलर केशर सिंह की मदद कर रहा था। उन्होंने अचानक उस क्षेत्र के प्रभारी (वर्क्स) ओवरसियर मोहन सिंह द्वारा बजाए गए अलार्म को सुना तथा तुरन्त ड्रिलिंग कार्य बन्द कर दिया। उन्होंने लुढ़कते हुए चट्टानी शिलाखण्डों के साथ ओवरसियर मोहन सिंह तथा डी ई एस कर्ण सिंह को घाटी में गिरते हुए देखा। श्री मार्टिन बार्जो ने उस समय सूझबूझ दिखाई तथा श्री केशर सिंह के साथ मिलकर टाट की बोरियों से काम चलाऊ स्ट्रैचर तैयार किया। ओवरसियर मोहन सिंह डी ई एस कर्ण सिंह को बचाने के लिए तथा अत्यधिक ढलान वाली पहाड़ी से घाटी की ओर गए जहां अभी भी शिलाखण्डों के टुकड़े लुढ़क रहे थे। लुढ़कते हुए शिलाखण्डों के बावजूद श्री मार्टिन बार्जो घटनास्थल पर पहुंचे तथा खड़ी चट्टानी पहाड़ी पर चढ़कर ओवरसियर मोहन सिंह तथा डी ई एस कर्ण सिंह को बचाकर सड़क किनारे तक लाए। श्री मार्टिन बार्जो द्वारा समय पर बचाव के कारण दोनों दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों को तत्काल प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध कराई जा सकी। तत्पश्चात् दुर्घटनाग्रस्त दोनों व्यक्तियों को इलाज के लिए अस्पताल दिनजन लाया गया।

2. श्री मार्टिन बार्जो ने दुर्घटना में दो व्यक्तियों की जान बचाने में निष्ठा, साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

48. मास्टर आशीष कुमार,
द्वारा श्री रामजी प्रसाद,
मोहल्ला कोयरीबाड़ी, गली नं. 1,
नादरागंज, जिला गया (बिहार)-823001

49. मास्टर प्रिंस कुमार,
द्वारा श्री रामजी प्रसाद,
मोहल्ला कोयरीबाड़ी, गली नं. 1,
नादरागंज, जिला गया, बिहार-823001

05 नवम्बर, 1999 को लगभग 11.30 बजे पूर्वाह्न श्री रामजी प्रसाद तथा उनका पुत्र मास्टर आशीष कुमार अपनी दुकान से घर लौट रहे थे। जैसे ही वे अपनी गली में घुसे उन्होंने दो अपरिचितों को अपनी ओर घूरते देखा। तेज कदमों से चलकर वे अपने घर की ओर बढ़े तथा दरवाजे की घण्टी दबा दी। जैसे ही मास्टर आशीष के छोटे भाई मास्टर प्रिंस कुमार ने दरवाजा खोला वे दोनों अन्दर घुस गए। जैसे ही मास्टर आशीष ने दरवाजा बंद करना चाहा तभी 8--10 सशस्त्र व्यक्ति जबरन अन्दर घुस गए। यह देखकर उनके पिता दौड़कर मकान की दूसरी मंजिल पर चले गए तथा खतरे का संकेत दे दिया। डाकुओं ने मास्टर आशीष की कनपटी पर रिवाल्वर रख दिया। जब उस लड़के ने विरोध करने की कोशिश की तो चार-पांच डाकुओं ने उस पर कई बार प्रहार किया। जब मास्टर आशीष गंभीर रूप से घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा तो मास्टर प्रिंस कुमार एक बदमाश पर झपट पड़ा। उसने डाकू की गरदन को अपने हाथों से जकड़ लिया तथा अपने दांतों से उसे काट लिया। तभी दूसरे डाकू ने मास्टर प्रिंस को ठोकर मारी तथा उस पर कई प्रहार किए। तथापि, मास्टर प्रिंस ने उसे जाने नहीं दिया। अचानक डाकुओं ने मास्टर आशीष पर गोली चला दी किन्तु निशाना चूक गया। फिर उन्होंने मास्टर प्रिंस को निशाना बनाया। गोली उस लड़के की पीठ में लगी। फिर उस पर बम फैंकते हुए वे भागने लगे। तथापि, बम मास्टर प्रिंस से पांच मीटर की दूरी पर फटा। चूंकि विस्फोट से लड़के की दृष्टि धुंधली हो गई, इसलिए बदमाश भाग गए। तत्पश्चात् मास्टर प्रिंस और मास्टर आशीष को उनके पिता अस्पताल ले गए। मास्टर प्रिंस की पीठ से गोली निकालने के लिए उसका दो दिन बाद आप्रेशन किया गया।

2. मास्टर आशीष कुमार तथा मास्टर प्रिंस कुमार ने डाकुओं का मुकाबला करने में बहादुरी का परिचय दिया तथा अपनी जान को जोखिम में डालकर डकैती के प्रयास को विफल कर दिया।

50. मास्टर अब्दुल मजीद,
द्वारा श्री मोहम्मद रमजान,
लम्बेरी मोहरा तियाला, पो.आ. लम्बेरी,
तहसील नोशेरा, जिला राजौरी (जम्मू एवं कश्मीर)-185152

25-12-1998 को चार सशस्त्र उग्रवादी मोहम्मद जबीर के घर में घुसे। आतंकवादियों ने घर के लोगों तथा पड़ौसियों को धमकी दी तथा उन्हें घर से बाहर न जाने का आदेश दिया। यह देखकर पड़ौस में रहने वाले मास्टर अब्दुल ने अपनी किताबें उठाईं तथा उग्रवादियों को चकमा देते हुए एस टी एफ पोस्ट लम्बेरी की ओर भागा। मास्टर अब्दुल से घटना की सूचना पाकर एस टी एफ घटनास्थल पर आया तथा उस क्षेत्र को घेर लिया। बलों तथा उग्रवादियों के बीच घमासान मुठभेड़ हुई जिसमें तीन उग्रवादी मारे गए तथा भारी मात्रा में शस्त्र तथा गोलाबारूद बरामद किया गया।

2. मास्टर अब्दुल ने कुछ व्यक्तियों की जान बचाने में साहस एवं सूझ-बूझ का परिचय दिया तथा अपनी जान को जोखिम में डालकर तीन अग्रवादियों को मौत के घाट उतारने में मदद की।

51. मास्टर बिनोद नोंग्रम,
मार्फत श्रीमती गोपी नोंग्रम,
फोरेस्ट कॉलोनी, पोलो,
शिलांग-793001, मेघालय।

18 सितम्बर, 1999 को लगभग 10.00 बजे सुबह मास्टर बिनोद नोंग्रम पांच अन्य लड़कों के साथ कपड़े धोने के लिए स्प्रेड ईगल झरने पर गए थे। वहां पहुंचकर उन्होंने पाया कि उनके नियमित स्थल पर कपड़ा धोने की कोई जगह नहीं रही है। अत: वे एक छोटी सी धारा के पास गए और झरने के ऊपर बैठकर कपड़े धोने लगे। कुछ समय बाद उनमें से एक मास्टर विकास थापा अपने पैर धोने के लिए झरने के किनारे गया और अचानक फिसलकर पानी के अन्दर की ओर चला गया। यह देखकर मास्टर बिनोद नोंग्रम अपने दोस्त को बचाने के लिए दौड़ा और अपने दोस्त का हाथ पकड़कर उसे बाहर खींचने की कोशिश करने लगा। परन्तु, दुर्भाग्यश दोनों ही धारा की चपेट में आ गए। मास्टर विकास सहारे के लिए घास पकड़ने में कामयाब हो गए, परन्तु मास्टर बिनोद तीव्र धारा में बह गए। मास्टर विकास और उसके दोस्तों ने मास्टर बिनोद को बचाने की कोशिश की परन्तु असफल रहे और इस दुर्घटना में मास्टर बिनोद की जान चली गई।

2. मास्टर बिनोद नोंग्रम ने एक लड़के का जीवन बचाने का प्रयास करके साहस और तत्परता का परिचय दिया और इस कार्य में अपने जीवन का सर्वोत्तम बलिदान कर दिया।

52. कुमारी चण्डुबा,
ढोलावीरा ट्राल, भचाऊ, गांधीधाम,
कोआपरेटिव बैंक, गांधीधाम,
जिला कच्छ, भुज, (गुजरात)।

30 जून, 1999 को को-आपरेटिव बैंक, गांधीधाम के चौकीदार श्री सरदार सिंह अपने भतीजे धिरूवा और पुत्री चण्डुबा के साथ बैंक के परिसर में सो रहे थे। लगभग 2.00 बजे सुबह तमंचा रिवाल्वर और एक लोहे की छड़ से लैस चार लुटेरे बैंक परिसर में घुसे तथा सरदार सिंह, धिरूबा और चण्डुबा को जगाकर उनसे बैंक की चाबियां मांगी। जब श्री सरदार सिंह ने बताया कि उसके पास बैंक की चाबियां नहीं हैं तो लुटेरों ने उन सबके हाथ पीछे की ओर रस्सी से बांध दिए और उनको शौचालय में बंद कर दिया। फिर लुटेरे बैंक के पीछे जाकर लोहे की छड़ से खिड़की की ग्रिल तोड़ने लगे। इसी बीच श्री सरदार सिंह ने अपने भतीजे की मदद से अपने हाथों की रस्सी खोल दी। जब श्री सरदार सिंह सहायता के लिए चिल्लाए तो दो लुटेरों ने शौचालय का दरवाजा खोला और उनमें से एक ने सरदार सिंह पर गोली चलायी। परन्तु गोली उनके सिर के ऊपर से निकल गई। तत्पश्चात् बदमाशों ने लोहे की छड़ से सरदार सिंह के सिर और कुहनी पर वार किए। शोरगुल सुनकर कुमारी चण्डुबा चौकन्नी हो गई। जब कुमारी चण्डुबा ने देखा कि दो आदमी उसके पिता और चचेरे भाई के साथ गुत्थमगुत्था हो रहे हैं तो वह दरवाजे की तरफ दौड़ी और सहायता के लिए चिल्लाने लगी। आवाज सुनकर लुटेरों ने शौचालय की ओर दौड़ी दरवाजा बंद कर

दिया और दरवाजे की ओर गए। यह देखकर कुमारी चण्डुबा शौचालय की ओर दौड़ी और उसका दरवाजा खोल दिया। इसी बीच चिल्लाने की आवाज सुनकर पड़ौसी और अन्य लोग बैंक परिसर में आ गए। चारों लुटेरे क्षेत्र की गश्ती पुलिस द्वारा पकड़ लिए गए।

2. कुमारी चण्डुबा ने अपने पिता और चचेरे भाई की जान बचाने में बहादुरी, तत्परता और सूझबूझ दिखाई तथा अपने जीवन को गंभीर खतरे में डालकर लूट के प्रयास को विफल कर दिया।

53. मास्टर हानबोक्लांग नांग्सिज,
मार्फ़त श्री नी नोंग्रम, पोन्गकंग,
बी. पी. ओ. पोंनाकंग, बी. आई. ए.-मावफ्लांग-79321
डब्ल्यू. के. हिल्स, मेघालय।

05 जनवरी, 2000 को जब श्री राच नोंग्सिज की पत्नी खारबानी खेत में काम करने गई हुई थी तो उनके घर में आग लग गई। उस समय उनका नौ महीने का बच्चा घर में ही था। आग की लपटें देखकर श्रीमती खारबानी सहायता के लिए चीखने-चिल्लाने लगीं। मास्टर हानबोक्लांग नोंग्सिज घर में कूदे और लपटों का सामना करते हुए बच्चे को सुरक्षित बाहर ले आए। घर और उसमें रखा सारा सामान आग की भेंट चढ़ गया।

2. मास्टर हानबोक्लांग नोंग्सिज ने अपनी जान की परवाह किए बिना एक नौ माह के बच्चे को आग में जलने से बचाकर साहस और बहादुरी का परिचय दिया।

54. कुमारी हेना बक्शी,
मार्फ़त लेफ्टिनेंट कर्नल पी. बक्शी,
372/I बी.एस. इन्कलेव,
अम्बाला केण्ट-133001 (हरियाणा)

03 अगस्त, 1999 को जब बक्शी परिवार सोया हुआ था तो बहुत सुबह तीन लोग ड्राइंग रुम की खिड़की की ग्रिल तोड़कर ले. क. बक्शी के घर मे घुस आए जिनमें से एक बेडरूम में घुसा जहां कुमारी हेना और उसका भाई सो रहे थे। जैसे ही चोर ने कमरे की लाइट जलाई कु. हेना जाग गई और उसने गहरी नींद में होने का बहाना किया चोर ने कमरे में रखी स्टील की अलमारी खोलने की कोशिश की। जब वह अलमारी न खोल सका तो पास वाले कमरे, जहां हेना के माता-पिता सो रहे थे, में जाने के लिए हेना के बेडरुम से निकल गया। कु. हेना ने तुरन्त उठकर उसका पीछा किया और चिल्लाने लगी। उसकी आवाज से उसके पिता चौकन्ने हो गए। इससे पहले कि लै.क. बक्शी कुछ कर पाते, चोर ने बचकर भागने की कोशिश की। परन्तु कुमारी हेना ने उसे दरवाजे पर पकड़ लिया। चोर अपने साथियों को सतर्क करने के लिए चिल्लाया और उसने हेना को धकेल दिया। वह घर के मुख्य द्वार पर पहुंचा ही था कि ले. क. बक्शी ने उसको जकड़ लिया और उसे पुलिस के हवाले कर दिया। बाद में उसके साथियों को भी पकड़ लिया गया।

2. कुमारी हेना ने चोरी के प्रयास को विफल करने में सूझबूझ और तत्परता दिखाई।

55. मास्टर कुम्भाराम मीणा,
सुपुत्र श्री इन्दरराज मीणा,
गांव-सिकरोड़ा जाट, तहसील हिण्डन,
जिला-करौली-322230 (राजस्थान)

27.9.1999 को मास्टर कुम्भाराम मीणा स्कूल जा रहे थे। जब उन्होंने महीवीरजी और हिण्डन रेलवे स्टेशन के बीच रेलपथ पार किया तो देखा कि रेलपथ का एक हिस्सा टूटा हुआ है। मास्टर कुम्भाराम बिना समय गंवाए तीन किलोमीटर महावीरजी रेलवे स्टेशन की ओर दौड़े और रेलवे के स्टेशन के कैबिन मैन को इस बारे में सूचित किया। फिर कैबिन मैन ने स्टेशन मास्टर को सूचित किया। थोड़ी ही देर में वहां से मुम्बई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस गुजरने वाली थी। स्टेशन मास्टर ने तुरन्त सिगनल डाऊन कर दिया। रेलगाड़ी क्षतिग्रस्त पथ से सुरक्षित दूरी पर रूक गई और पथ की मरम्मत कर ली गई। पथ की मरम्मत हो जाने के बाद रेलगाड़ी एक घण्टे देर से गई।

2. मास्टर कुम्भाराम मीणा ने सूझबूझ और तत्परता का परिचय दिया तथा एक रेल दुर्घटना को टालकर उसमें यात्रा कर रहे अनेक लोगों की जानें बचाई।

56 मास्टर लैशराम उत्तम कुमार सिंह,
मार्फ़त श्री लैशराम दिलीप सिंह,
नांग्थावल कुंज, मयाई लैकी,
कांचीपुर-795003 (मणिपुर)

16-11-1999 को नांग्थाबल कुंज गांव के लोग अपने धान के खेतों में काम कर रहे थे। लगभग 3.00 बजे अपराह्न मास्टर लैशराम उत्तम कुमार सिंह और उसका दोस्त मास्टर निंग्थौजम भैग्याचन्द्र सिंह घास लेकर घर वापिस आ रहे थे । रास्ते में उनको एक मुर्गी दिखाई पड़ी। उन्होंने घास नीचे रख दी और मुर्गी को पकड़ने के लिए उसका पीछा करने लगे। जब वे दौड़ रहे थे तो अचानक मास्टर भैग्याचन्द्र ने तारों के एक जाल को छू लिया जो घास के ढेर से घिरा हुआ था। वह तत्काल विद्युत करंट से जकड़ गया और बेहोश होकर गिर गया। यह देखकर मास्टर लैशराम अपने दोस्त की ओर दौड़ा। जैसे ही उसने मास्टर भैग्याचन्द्र को छुआ तो विद्युत करंट ने उसको भी झटका देकर दूर फैंक दिया। मास्टर लैशराम ने घास ढोने के काम आने वाले छोटे तौलिए को अपने हाथ पर लपेटा और फिर मास्टर भैग्याचन्द्र को खींचा। इस प्रकार उसने भैग्याचन्द्र को तारों के जाल से पृथक कर लिया। फिर वह सहायता के लिए निकट के डी-एडिक्शन केन्द्र में गया। वहां के चिकित्सा दल ने तुरन्त आकर मास्टर भैग्याचन्द्र की प्राथमिक चिकित्सा की और उसकी जान बचाई।

2. मास्टर लैशराम ने अपने जीवन को गंभीर खतरे में डाल कर बिजली का करंट लगने से अपने दोस्त की जान बचाने में बहादुरी, सूझबूझ और साहस दिखाया।

57. मास्टर लौकिक राजीव भटकर मार्फत श्री राजीव भटकर,
मातृ-पितृ छाया बंगला, मिडिल क्लास सोसाइटी, फ्लैट नं. 13, पन्वेल, जिला-रायगढ़-410206, (महाराष्ट्र)

06 सितम्बर, 1999 को लगभग 4.00 बजे सुबह पिछले दरवाजे का ताला तोड़कर दो चोर श्री राजीव भटकर के घर में घुस गए। उनके पुत्र मास्टर लौकिक भटकर जाग गए और उन्होंने देखा कि घर का पिछला दरवाजा खुला है। उसने सोचा कि शायद उसकी मां पिछली रात दरवाजा बंद करना भूल गई होगी। वह उसे बंद करने चला अचानक रसोईघर में छुपा एक चोर भागा। उसके साथी ने मास्टर लौकिक के चेहरे पर टार्च से रोशनी की। परन्तु मास्टर लौकिक ने उसे पकड़ लिया और जब वह चोर से गुत्थमगुत्था हो

रहा था तो चह चिल्लाता रहा। उसका चिल्लाना सुनकर उसके मां-बाप जाग गए। जैसे ही उसकी मां सामने आई तो चोर ने पेचकस और चाकू से वार करके उसको घायल कर दिया। परन्तु उसके पति ने चोर को पकड़ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया। चोर ने घर से चुराई नकदी (46,00/-रु.) भी लौटा दी।

2. मास्टर लौकिक ने अपने जीवन को गंभीर खतरे में डालकर चोरी के प्रयास को निष्फल करने में साहस और बहादुरी दिखाई।

58. मास्टर पी. तिरुमलाई
15ए, कृष्णन स्ट्रीट, वेस्ट मम्बलम,
चैन्नई-600033 (तमिलनाडु)।

05 अगस्त, 1999 को मास्टर तिरुमलाई साइकिल से स्कूल से आ रहे थे। रास्ते में वह साइकिल में हवा भरने के लिए साइकिलों की मरम्मत करने वाली एक दुकान पर रुक गए। तभी विपरीत दिशा से साइकिल पर आ रहे एक लड़के को एक बस ने टक्कर मार दी जिससे वह साइकिल से गिर कर बस के नीचे आ गया और उसकी टांग पहिए में फंस गई। बस चालक डरकर भाग गया। यह देखकर मास्टर तिरुमलाई ने कुछ दूर तक उसका साइकिल से पीछा किया परन्तु वह उसे पकड़ न सका। तब दुर्घटनाग्रस्त बालक का चिल्लाना सुनकर मास्टर तिरुमलाई दुर्घटना स्थल पर वापस आया। उसने अकेले ही उस बालक को पहिए के नीचे से निकाला। बालक के सिर और टांग पर लगे घावों से अत्यधिक खून बह रहा था। रेडक्रास का जूनियर छात्र होने के नाते प्राथमिक चिकित्सा के जानकार मास्टर तिरुमलाई ने दुर्घटनाग्रस्त बालक की टांग पर अपना रूमाल बांध दिया। तब वह उसे चिकित्सा के प्रयोजनार्थ ले जाने का प्रयास करने लगा परन्तु ज्यादा ताकतवर न होने के कारण वह घायल बालक को उठा नहीं पाया। अत: उसने वहां से गुजरने वालों से मदद मांगी। अन्य लोगों ने मना कर दिया। परन्तु एक स्कूली छात्र ने आगे आकर तिरुमलाई की मदद की और घायल बालक को पास के अस्पताल पहुंचवाया जहां उसका इलाज किया गया।

2. मास्टर तिरुमलाई ने एक बस दुर्घटना में एक बालक की जान बचाने में तत्परता और साहस का परिचय दिया।

59. कुमारी पारुल मिश्रा,
द्वारा श्री विजय कुमार मिश्रा,
491/7, मुंशीगंज, डालीगंज,
लखनऊ-226020 (उत्तर प्रदेश)।

22 दिसम्बर, 1999 को कुमारी पारुल अपनी सहेली प्रियंका के साथ खेल रही थी। प्रियंका के पिताजी ने तभी कुछ चावल पकाए थे और गर्म राख बाहर फैंकी थी। प्रियंका ने यह राख देख ली तथा उसमें से कुछ राख लेने के लिए गई ताकि वह उससे अपनी गुड़िया के बर्तन धो सके। जैसे ही प्रियंका ने राख उठाने की कोशिश की वैसे ही वह जलते हुए कोयलों पर आ गिरी। प्रियंका सहायता के लिए चिल्लाई, कुमारी पारुल तुरन्त उसकी ओर दौड़ पड़ी। स्थिति की गंभीरता को समझे बिना उसने जलते हुए कोयलों पर चलते हुए प्रियंका को उठाया और शोर मचाने लगी। तब तक कुमारी पारुल की रबड़ की चप्पलें गल चुकी थीं। उनका शोर सुनकर उनके पास रहने वाला रवि उनकी ओर दौड़ा आया तथा उन दोनों को बाहर खींच लिया। तब दोनों लड़कियों को उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया। जलने के कारण प्रियंका का अस्पताल में लगभग 4 महीने तक इलाज चला जबकि कुमारी पारुल के पैरों की प्लास्टिक सर्जरी की गई।

2. अपनी कम उम्र के बावजूद कुमारी पारुल ने अपने जीवन को अत्यधिक खतरे में डालकर अपनी सहेली की जान बचाने में अदम्य साहस तथा सूझबूझ का परिचय दिया।

60. मास्टर प्रिंस वी. डोमिनिक,
द्वारा श्री के.वी. डोमिनिक विपना हाऊस,
अरुणापुरम डाकघर, पाला,
कोट्टायम जिला-686574 (केरल)।

24 जुलाई, 1999 को श्री के.वी. डोमिनिक अपने नगर से बाहर गए हुए थे। उनकी पत्नी पुत्र मास्टर प्रिंस डोमोनिक रात को गहरी नींद में सोए हुए थे। प्रात: 3.30 बजे के आस-पास श्रीमती डोमिनिक ने किसी खिड़की के टूटने की आवाज सुनी। ध्यानपूर्वक सुनने के बाद उन्होंने सुना कि बगल वाले कमरे में कोई चल रहा है। उन्होंने प्रिंस डोमिनिक को जगाया। वे दोनों ही दोनों कमरों को जोड़ने वाली जगह तक गए और वहां पर खड़े हो गए। श्रीमती डोमिनिक ने घुसपैठिए के चेहरे पर टार्च से रोशनी की। इससे सकपका कर वह चोर कुछ क्षणों तक जड़वत् खड़ा रहा। मौके का फायदा उठाते हुए मास्टर प्रिंस ने उसे पीछे से पकड़ लिया। चूंकि घुसपैठिया अपने आप को प्रिंस की पकड़ से नहीं छुड़ा पाया, इसलिए उसने लड़के को उस स्थान तक घसीटा जहां पर उसने अपने औजार छोड़े हुए थे। लेकिन मास्टर प्रिंस उसे नीचे गिराने में सफल हो गया और उसे पकड़ कर रखा। इसी बीच श्रीमती डोमिनिका ने सहायता के लिए पड़ौसियों को आवाज लगाई। उनकी सहायता से घुसपैठिए के हाथों को बांधा गया और बाद में उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया।

2. मास्टर प्रिंस ने अपने जीवन की परवाह किए बिना डकैती के प्रयास को विफल करने में साहस और वीरता का परिचय दिया।

61. मास्टर रुबिन लमैकी किन्ता,
द्वारा श्री इवांस रियन्झा सोलोमन,
2, लिंधस्ट स्टेट, अपर न्यू कालोनी,
लैतुमखराह, शिलांग-793003 (मेघालय)।

18 अप्रैल, 2000 के अपराह्न को जब मास्टर रुबिन किन्ता बस स्टाप से घर वापस आ रहा था तो एक पागल कुत्ते ने उसके दाहिने टखने को काट लिया। आगे दौड़ते हुए तब उस कुत्ते ने श्रीमती गभंगशी की टांग पर काट लिया तथा उसके तुरन्त बाद एक अन्य महिला श्रीमती लिंगदोह को उसके टखने पर काट लिया। जब श्रीमती लिंगदोह उस कुत्ते को भगाने की कोशिश कर रही थीं तो वह नीचे गिर पड़ीं और फिर कुत्ते ने उन्हें चारो तरफ से काटना शुरू कर दिया। वह सकायता के लिए चिल्लाई। चूंकि आने-जाने वाले सभी लोग उसे बेसहारा देख रहे थे, इसलिए मास्टर रुबिन उसकी सहायता के लिए दौड़ा आया। उसने कुत्ते के दोनों जबड़ों को पकड़ कर वृद्ध महिला को उसकी गिरफ्त से छुड़ाया। तब मास्टर रुबिन ने कुत्ते को नीचे पटक कर उसका गला दबाने की कोशिश की तथा करीब 10 मिनट तक मुठभेड़ होने के पश्चात् वह कुत्ते को मारने में सफल हुआ। तब मास्टर रुबिन उन दोनों महिलाओं को टैक्सी में अस्पताल ले गया ताकि वह उन्हें तथा अपने आपको एण्टी-रैबीज टीका लगवा सके। इसके बाद मास्टर रुबिन ने उन दोनों महिलाओं को घर छोड़ा।

2. मास्टर रुबिन ने अपने जीवन को दांव पर लगा कर एक पागल कुत्ते के साथ मुठभेड़ कर दो महिलाओं की जान बचाने मे अत्यधिक साहस और तत्परता का परिचय दिया।

62. मास्टर सत्यनारायण बैरागी,
द्वारा कामता प्रसाद बैरागी,
ग्राम लौडीपुरा, डाकखाना बर्खेड़ा,
जिला-राजगढ़-465674 (मध्य प्रदेश)।

30 सितम्बर, 1999 को 18 वर्षीय कुमारी गेंदीबाई और उसकी सहेली 15 वर्षीय कुमारी गुड्डीबाई नहाने के लिए स्थानीय कुंए पर गईं । जब वे नहा रहीं थीं तो अचानक कुमारी गुड्डीबाई डूबने लगीं। जैसे ही गेंदीबाई ने अपनी सहेली को बचाने की कोशिश की तो वह भी डूबने लगी। दोनों ही लड़कियां। तैरना नहीं जानती थीं। उनकी चीख सुनकर मास्टर सत्यनारायण बैरागी, जो पास में लकड़ियां काट रहा था। उनकी सहायता को वहां पहुंचा। वह अपने जीवन की परवाह किए बगैर दोनों लड़कियों की जान बचाने के लिए कुंए में कूद पड़ा और उन दोनों को सुरक्षित बाहर निकालने में सफल हुआ।

2. मास्टर सत्यनारायण ने अपनी जान को अत्यधिक जोखिम में डालकर दो लड़कियों की जान बचाने में वीरता और तत्परता का परिचय दिया।

63. मास्टर तातोर पर्तिन,
द्वारा श्री तगुम पर्तिन,
ग्राम सिल्ले, डाकखाना सिल्ले
बरास्ता पालीघाट-791102,
जिला--पूर्वी सियांग, अरुणाचल प्रदेश।

29 दिसम्बर, 1999 की दोपहर को मास्टर तातोर पर्तिन पांच अन्य व्यक्तियों के साथ शहद एकत्र करने के लिए गया था। चूंकि वे अपने साथ घास-फूस ले जाना भूल गए थे इसलिए मास्टर तातोर पर्तिन उसे लाने के लिए गया। कुछ दूरी पर उसे कुछ बच्चों के रोने की आवाज सुनाई दी। जब वह उस ओर गया तो उसने एक झोंपड़ी को आग की लपटों में जलते हुए देखा। मास्टर तातोर पर्तिन और उसका साथी टी. बोये उस तरफ लपके। मास्टर तातोर झोंपड़ी के अन्दर गया और वहां से छह वर्ष तथा साढ़े तीन वर्ष के दो बच्चों को बाहर लाने में सफल हुआ और उनकी जान बचाई। उसके साथी ने भी सात वर्षीय एक बच्चे को बाहर निकाल कर उसकी जान बचाई । जैसे ही वह झोंपड़ी से बाहर निकले वह नीचे गिर गई। उन बच्चों को उनके माता-पिता को सौंप दिया गया जो थोड़ी देर बाद वहां पहुंचे थे।

2. मास्टर तातोर पर्तिन ने अपनी जान को जोखिम में डालकर आग की दुर्घटना से दो बच्चों की जान बचाने में बहादुरी और तत्परता का परिचय दिया।

64. मास्टर विष्णु विलास पवित्रन,
द्वारा श्री पवित्रन सी.एम.,
चयनपिरमपिल, पराठोड़ डाकखाना,
कोट्टायम जिला-686512-केरल।

26 जुलाई, 1999 को सायं 6.00 बजे श्री पवित्रन और उनकी पत्नी झरने से पानी लेने गई थीं। उनके दो बच्चे मास्टर विष्णु प्रसाद और कुमारी लक्ष्मी घर पर थे। मास्टर विष्णु रसोई में मिट्टी के तेल के उजाने में पढ़ रहा था। चूंकि उनका घर रबड़ बागान में था इसलिए उसके अन्दर अंधेरा था। उसकी साढ़े तीन वर्षीय बहन लक्ष्मी ने मिट्टी के तेल का दूसरा लैम्प जलाया और पत्रिका पढ़ने के लिए विष्णु के निकट बैठ गई। अचानक ही उसकी फ्राक में आग लग गई। इससे घबराकर वह चीखने-चिल्लाने लगी और कमरे में इधर-उधर भागने लगी। विष्णु ने उसे पकडा और अपने हाथों से आग बुझाने की कोशिश करने लगा। चूंकि उसके इस प्रयास का कोई फायदा नहीं हुआ इसलिए उसने लक्ष्मी को जोर से पकड़ा और उसे जमीन पर लिटा दिया। फिर उसने आग बुझाने का एक और प्रयास किया और इस बार वह आग बुझाने में सफल हो गया।

2. इसी बीच जलता हुआ एक लैम्प नीचे गिर गया और तेल नीचे फैल गया। जब मास्टर विष्णु ने यह देखा कि आग फैलने लगी है तो वह रसोई की ओर भागा और आग बुझाने के लिए उसने पीने के पानी के घड़े का इस्तेमाल किया। मास्टर विष्णु के गाल जल गए जबकि लक्ष्मी के कंधे मामूली रूप से जले। बाद में दोनों बच्चों का इलाज किया गया।

3. मास्टर विष्णु ने आग लगने की दुर्घटना से अपनी बहन को बचाने में साहस, तत्परता और वीरता का परिचय दिया।

बरुण मित्रा
राष्ट्रपति का उप सचिव

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

माध्यमिक शिक्षा एवं उच्चतर शिक्षा विभाग

(यूनेस्को एकक)

नई दिल्ली, दिनांक 23 मार्च 2001

संकल्प

सं. एफ.-27-38/96-यूनेस्को यूनिट--ऑरोविल फाउंडेशन अधिनियम, 1988 के अध्याय III के खंड 21 के उप खंड (1) और (2) के अनुरूप तथा दिनांक 17 दिसंबर, 1997 के समसंख्यक संकल्प के क्रम में भारत सरकार एतद्द्वारा श्री बर्नार्ड एफ. डे. मोन्टफेरां, राजदूत फ्रांस दूतावास, नई दिल्ली को अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार परिषद के सदस्य के रूप में नामित करती है।

2 श्री बर्नार्ड एफ. डे. मोन्टफेरां का कार्यकाल परिषद के शेष बचे हुए कार्यकाल तक के लिए होगा, अर्थात् 16 दिसंबर, 2001 तक।

च. बालकृष्णन
संयुक्त सचिव

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प को आम सूचना हेतु भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति ऑरोविल प्रतिष्ठान, भारत निवास, ऑरोविल-605101, वी आर. पी. जिला तमिलनाडु और श्री बर्नार्ड एफ. डे. मोन्टफेरां, राजदूत फ्रांस दूतावास, नई दिल्ली को भेजी जाए।

च. बालकृष्णन
संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 29th March 2001

No 52 Pres/2001 —The President is pleased to approve the award of "Uttam Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons —

1 Shri Thanghana (Posthumous)
Sethlun, Lunglei,
Mizoram

On 13-5-2000, Master Lalnuntluanga, aged 8 years accidentally came into contact with strong electric current flowing through corrugated iron sheets wall of a shop He was thrown on the ground and became unconscious while still in contact with the current The people gathered on the spot Shri Thanghana came out to rescue him and without caring for the risk of electrocution, he pulled the boy by the leg to separate him from the grip of electric current However, he was also caught by the strong electric current flowing through the iron sheets wall and he also became unconscious The people who had gathered there immediately separated both of them from electric current with the help of dry bamboo and admitted the victims in the nearest Civil Hospital The Doctor could not save Thanghana and declared him dead Master Lalnuntluanga recovered and was discharged from Hospital

2 Shri Thanghana showed great courage, bravery and promptitude in an attempt to save the life of a child from electrocution and made the supreme sacrifice of his life in the process

2 Shri Shankara Pillai, B OEM No GS-166112
484 RMPL (GREF), CARE 70 RCC,
(GREF), C/O 56 APO

On 17-5-2000 one Cheetah Helicopter from Stingri Helipad set out for aerial recce carrying CE, Brig B M Bakshi & Cdr 38 BRTF Shri S S Porwal at 1109 hrs On learning from Dett ZZ Bar that the Helicopter had crashed between Dett ZZ Bar and Baralachala (at km 191), another Helicopter comprising Wg Crd Chandra Singh, Flt Lt Bhusal and Capt Vishal Srivastava (RMO) took off from Stingri to search for the crashed helicopter It was learnt later that all the occupants of the first helicopter were safe despite the fact that it had crash-landed Meanwhile rescue party under Officer Commanding RCC also set out by road to search out the whereabouts of 1st helicopter On reaching Dett ZZ Bar, they learnt that second helicopter which had flown from Stingri for rescue operation had not returned back from Baralachala Pass even after the lapse of the time frame by which it should have returned back from Baralachala

2 OEM Sankara Pillai B under the Command of Officer Commanding 70 RCC set out for search operation They took Tata 407 vehicle and reached Baralachala Pass at Km 191 The crashed helicopter was spotted about 500 mtrs away from the roadside covered under snow OEM Shankara Pillai B immediately rushed towards the crash site He had to wade through waist deep snow to reach the crash spot and the other persons of the rescue party followed him On reaching the crashed helicopter, he found Pilot Flt Lt Bhusal and Capt Vishal Srivastava seriously injured and entrapped in the crashed helicopter Wg Cdr Chandra Singh was found dead

3 OEM Shankara Pillai B dug out the snow all around the helicopter with shovel to extricate the body of Flt Lt Bhusal and Srivastava from inside the helicopter The helicopter was ripped open with great difficulty and Capt Vishal Srivastava and Flt Lt Bhusal were extricated and brought to roadside Subsequently Capt Vishal Srivastava succumbed to his injuries but Flt Lt Bhusal survived and recovered in the hospital The body of Wg Cdr Chandra Singh was also brought to roadside In the entire process OEM Shankara Pillai B was in the waist deep snow The wind velocity in the pass is always quite heavy and the temperature was sub zero The entire operation took about 3 hours

4 OEM Shankara Pillai B showed great courage presence of mind and dedication to his duty and saved the life of person in a Helicopter crash

3 Master Lalnihana (Posthumous)
C/o Shri Biakmawia, Laiputlang,
P O Ramhlun-796 012,
P S Bawngkawn, Aizawl, Mizoram

On 24 10 1999, Master Lalnihana was playing with his friends when he heard playful sounds of some other children nearby Master Lalnihana went to the spot from where the sounds were emanating On reaching the spot he found some children playing inside a water reservoir belonging to the Public Health Engineering Department Suddenly he noticed that one of the boys, Master Jonathan Lalhuliana, was drowning in the water Master Lalnihana immediately dived into the reservoir without caring for his own life and pulled up Master Jonathan Master Jonathan was then lifted out of the reservoir by the other children Suddenly there was a heavy flow of water into the reservoir and though Lalnihana made a desperate effort, he could not get out of the reservoir and lost his life

2 Master Lalnihana showed courage, bravery and promptitude in saving the life of a boy from drowning and made the supreme sacrifice of his life in the process

4 Master Mukesh Kumar
C/o Shri Pana Lal, R/o Thathri,
PO & Teh Thathri,
Dist Doda 182 203 (J & K)

5 Master Sunil Singh
C/o Smt Neem Banti,
Village-Leotha (Nandna), PO & Teh Thathri,
Dist Doda-182 203 (J&K)

On 19 7 1999 at around 9 30 p m nearly 40 armed terrorists launched an attack on village Lehota in Doda district They opened fire on the villagers and Village

Defence Committee members with their automatic weapons and grenades. As many as 15 persons were killed and several others injured in the attack. Master Sunil Singh and Master Mukesh Kumar decided to confront the terrorists. While Mukesh Kumar picked up his dead father's gun, Sunil Singh took his brother's rifle. They engaged the militants in a fierce battle for several hours. One terrorist was killed and several injured in the fight with the two boys. The firing continued till 9.00 a.m. on 20th July, 2000 when the terrorists fled.

2. Master Mukesh Kumar and Master Sunil Singh showed exemplary courage and bravery in fighting with the militants and saved the lives of a number of villagers at great risk to their own lives.

BARUN MITRA
Dy. Secy. to the President

No. 53-Pres/2001.—The President is pleased to approve the award of "Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons:—

1. Shri Narayana Srinivas Reddy,
   S/o Shri Narsi Reddy,
   Post Ravivari Guda, H/o. Vemulapally,
   (M) Pin-508 217, Nalgonda District,
   Andhra Pradesh

2. Shri Narayana Sudhakara Reddy,
   S/o Shri Ranga Reddy,
   Post. Ravivari Guda, H/o Vemulapally,
   (M) Pin-508 217, Nalgonda District.
   Andhra Pradesh

On 22-11-1999 at about 1.30 p.m., Smt Khammampati Savitramma alongwith her two daughters Kum. Padma and Kum. Vijayakumari, having decided to commit suicide, left their house at Nalgonda on the pretext of going to watch a movie. Instead, they boarded a bus and got down at Vemulapally at about 4.00 p.m. hours and from there they went to Nagarjuna Sagar Left Canal Bridge at Settipalem village on foot through canal bund-road. After writing and putting a suicide note on the canal-bund, they jumped into the main canal in their attempt to commit suicide. Shri N. Srinivas Reddy and Shri N. Sudhakara Reddy who happened to pass through that way noticed the incident. They immediately jumped into the canal, swam fast and dragged the three ladies who were being washed away in the heavy flow of water. Thus the two boys saved the lives of the mother and her two daughters, putting their own lives into risk in the gushing waters of the canal as the canal was flowing with water 20 feet deep at that time.

2. Shri Narayana Srinivas Reddy and Shri Narayana Sudhakara Reddy showed promptitude, courage and presence of mind in saving the lives of a mother and her two daughters from drowning with utter disregard to their own lives.

3. Shri Hargunbhai (Posthumous)
   Six-86, New Janta Ward, 2/B Adipur,
   Kutch.

On 24-7-2000 five armed looters had started looting the passengers of Kutch Express train with the help of weapons. Shri Hargunbhai Lakhawani who was travelling by the same train tried to stop the looters and saved the lives of his co-passengers. However, he himself lost his life in the process.

2. Shri Hargunbhai showed courage and bravery in saving the lives of his co-passengers and made the supreme sacrifice of his life in the process.

4. Shri Sandeep Arora (Posthumous)
   Shop-cum Plot No. 5,
   HUDA Shopping Complex, Rohtak.

On 29-8-2000, Shri Sandeep Arora, a student of 3rd year, Engineering of Baba Mast Nath Engineering College, Rohtak, was returning home after attending his regular classes. On his way, he came to know that some students of his college were taking bath in Jawahar Lal Nehru Canal. The Canal was running with heavy discharge of water at the time of incident. The canal was 8 and ½ feet deep and there was turbulant flow of current in the canal. Shri Sandeep Arora and his friend Shri Rajat Raj sat on the bank of the canal. They saw that one of the boys, who was a friend of Sandeep, started drowning in the canal. Shri Rajat Raj immediately jumped into the canal to save the boy. However, while saving the boy, he himself started drowning. Although Shri Sandeep did not know swimming, yet he jumped in the canal. He saved the boy and thereafter attempted to save his friend Rajat Raj. But unfortunately he slipped into the canal and both were drowned. The bodies of both were taken out by District Authorities after closing the gates of the canal. Shri Sandeep Arora succeeded in saving the life of a boy but sacrificed his own life in the process.

2. Shri Sandeep showed bravery in saving the life of a boy but in the process made the supreme sacrifice of his own life.

5. Shri Dhian Singh,
   Village Hathon,
   P.O. & Tehsil Kandaghat,
   Distt. Solan (H.P.)

On 17-7-2000, when it was heavily raining, four girl students Km. Sunita, Km. Poonam, Km. Rekha and Km. Usha of Govt. High School, Guggaghat, Dist. Solan were on their way back home. A few metres away from the school, they were trapped in the big land-slide which was silently

sliding from the hill side On hearing the cries of children who were behind those girls, the PET Shri Dhian Singh immediately came running from the School and jumped into the muddy debris to save the lives of the girls who were buried upto neck He swung into action without caring for his life and evacuated all the four girls to a safe place carrying them one by one In the action Shri Dhian Singh lost his clothes, shoes and even the money he had with him He took all the four girls to the hospital and remained there till they recovered from the shock of the incident

2 Shri Dhian Singh showed promptitude, courage and presence of mind in saving the lives of four children without caring for the risk to his own life

6 Shri Manohar Lal,
Village Bhagarwan, PO Dadhol, Tehsil
Ghumarwin, Distt Bilaspur,
Himachal Pradesh

On 29-7 1999, Km Shashi Kiran who was crossing the Rohal Khud alongwith her brother and sister, slipped into it The width of the Khud was 5-6 feet and the depth of fast current of water was 8-9 feet Shri Manohar Lal jumped into the Khud to save the girl without caring for his own life Due to fast current, he was able to catch the girl in his third attempt and brought her back to the bank in an unconscious condition Thus he saved the life of a girl

2 Shri Manohar Lal showed promptitude and bravery in saving the life of a girl from drowning at great risk to his own life

7 Shri Ram Prakash,
Village Dharoti, PO Tikkar,
Sub Teh Tikkar Distt Shimla,
Himachal Pradesh

On 20 7 1999, the bridge on Sarendali Khud was washed away due to heavy rains Master Subhash S/o Shri Shanti Bahadur who was going to his school came into the grip of fast current of the flash flood flowing while crossing the Khud The depth of flowing water was about 6 7 feet at the time of the incident Shri Ram Prakash jumped into the Khud without caring for the risk to his own life, to save the life of Master Subhash from 15 metres down stream He himself got badly injured in the life saving process

2 Shri Ram Prakash showed great courage and promptitude in saving the life of a child from drowning at a great risk to his own life

8 Shri Sudarshan (Posthumous)
Dr Narasimha G Bhat "Kanavu"
Peruvaze Village, Sullya Taluk
Dakshina Kannada, Karnataka

On 19 4 1998, at about 1300 hours, the students of Dental College, Dharwar had gone for a picnic to 'Shiva Ganga' Hill in Sirsi Taluka While the students were taking rest on the bank Shiva Ganga falls one of the students, Kumari Geetha Kamath aged 21 years accidentally slipped into the pond which is about 75 x 100 in dimension and 40 to 50 deep Shri Sudarshan Gopalkrishna Bhat, a fellow student aged 22 years who knew swimming immediately jumped into the pond and caught hold of Ku Geetha and with great difficulty, pushed her on the top of the bank of the falls and saved her life single handedly However during this course of act he himself was caught in the current and was drowned in the pond and lost his own life

2 Shri Sudarshan showed great courage and promptitude in saving the life of a fellow student and made the supreme sacrifice of his own life in the process

9 Shri Prasanth K (Posthumous)
Nanampuvila Vadakkathil Prasanth Bhavan
Karikkoducherry Kandachira,
Mangadu PO

On 7 2-1998, Shri Prasanth, a student of first year Agricultural Engineering, went to take bath in the Bharathapuzha river with his college mates Shri Prasanth who did not know swimming stood on the bank of the river while his friends Shri Yesudas and Shri Skaria went to take bath where the river was 100 metres wide and 2 metres deep After bath two friends swam towards the bank of the river However Shri Yesudas started drowning due to under currents where the water level was about 3 metres deep At that time Shri Prasanth with great courage and presence of mind, jumped into the river and rescued his friend Yesudas from drowning However, unfortunately he himself got involved in the under-current and was drowned A fisherman, who rushed to the spot, recovered the deadbody of Shri Prasanth

2 Shri Prasanth showed great courage and presence of mind in saving the life of his friend and made the supreme sacrifice of his life in the process

10 Shri VP Vijayan
S/o Santhakumary, Paramel Tea Shop
Near Mayannurkavu PO Mayannur,
Ottappalam, Thrissur District, Kerala

On 2-3-1999 two students of St Thomas High School, Mayannur accidentally fell into the Bharathapuzha river near their school while washing their hands and legs after examination The width of the river in that area was about 100 metres and depth of water was 25 feet Shri Vijayan who was then taking bath at the nearby side of the river heard the loud cries of the drowning students and came to the spot He rescued them one by one without caring for the risk to his own life

2 Shri Vijayan a 10th Standard student showed great courage and promptitude in saving the lives of two boys without caring for the risk involved to his life

11 Shri Vijeesh M G
Manathanattu Veedu, Pariyaram P O,
Kadamuri, Kottayam, Pin 686021

On 4 4 99, Smt Kunjumol was taking bath in the Kodoor river near Ittymani Bridge She was accidently caught in the current and reached the deep part of the river She started drowning and shouted for help The depth of the river was about 13 feet and was dangerous At that moment Shri Vijeesh, who was taking bath on the opposite side of the river, rushed to the spot and jumped into the river without caring for the risk to his own life He swam towards the accident site and helped the drowning lady to reach ashore She was in unconscious state and Shri Vijeesh gave her first aid She was later admitted to a nearby hospital and her life was saved

2 Shri Vijeesh showed promptitude courage and bravery which saved the life of a lady from drowning

12 Master Jamsheed Kurikkal
S/o Ummer Kurikkal, Parappurath House,
Thurakkal, Manjeri-676121,
Malappuram District, Kerala

On 26 12-1999, two children, Master Ramees, aged 6 years and Master Noufal aged 7 years slipped and fell into a tank in the mosque at Thurakkal near Manjeri The tank was 8 metres in square shape and 6 metres deep The level of water in the tank at the time of the incident was 4 metres One of their friends informed about the incident to a nearby house belonging to Shri Parapurath Ummer Kurikkal Master Jamsheed Kurikkal a student of IXth class, reached the spot and jumped into the tank without any fear and rescued Master Noufal from the tank Then he came to know that one more boy is also there in the tank He again jumped into the tank and rescued Master Ramees also By this time, the local people gathered and took the children to the District Hospital, Manjeri where they were admitted and discharged after three days

2 Master Jamsheed showed courage, bravery and promptitude in saving the lives of two boys from drowning

13 Master Asharafudheen O M,
S/o O B Muhammed, Olichalil House,
Cheruvattoor, P O, Kothamangalam,
Ernakulam District Kerala

On 15 7 1998 a girl named Kumari Benacir aged 16 years was taking bath in a village pond full of water The pond is 5 metres long 4 metres wide and 3 10 metres deep Suddenly she fell in the pond Two other girls named Kumari Saleena and Kumari Rahath who came there for taking bath jumped into the pond and tried to rescue Kumari Benacir However all the three girls started drowning in the pond Another girl named Kumari Ruby saw this tragic scene and cried out loudly Master Asharafudheen who was nearby heard the shouts and jumped into the pond without caring for the risk involved to his life He saved all the three girls one by one single handedly Master Asharafudheen, who was only 11 years at the time of the incident, knows swimming

2 Master Asharafudheen showed courage and bravery in saving the lives of three girls from drowning at great risk to his own life

14 Shri Babu P
Pandaraparamb House Puthiyara P O
Kozhikode-4 Kerala

15 Shri Masood P P
Afiel , 27/1359 Kolleriparamb
Puthiyara, P O Kozhikode 4, Kerala

On 20-2 1999, at Kalluthan Kadavu near Puthiyara, Kozhikode an elephant turned violent on the Public road, terrifying the people and paralysing the vehicular traffic The two mahouts who looked after the elephant, failed to control it despite their best efforts The panic stricken people in and around the locality began to run hither and thither At that moment, Shri Babu, an autorickshaw driver and Shri Masood, a trauma care worker reached the scene Although a large number of people had gathered there, only these two persons boldly came forward to tame and control the violent tusker They, with great courage and bravery, approached the violent tusker, fastened a rope in its chain and tied it to a tree A possible danger to human life and property which would have been caused by the violent tusker was thus avoided by the timely and courageous action of these two local people

2 Shri Babu and Shri Masood showed great courage, presence of mind in saving the public life and property from an elephant attack

16 Master K K Shibin
S/o Shri Karappakutty Krishnan, Karadan
House, Chevoor P O, Thrissur District,
Kerala

On 1 1-2000, a thatched house owned by Smt Kamala caught fire from the kitchen due to wind At that time Kamala's 5 year old daugher, Akhila and one and half year old son, Nikhil were sleeping inside the House Master K K Shibin, who was on his way to bath outside his house, nearby the burned house, noticed the fire He immediately went inside the burning house and rescued the two children single handedly from the burning house disregarding the threat to his life The fire was so severe that its flames rose about 4 metres high from the roof of the thatched house and the whole house was burnt to ashes within a short time

2 Master K K Shibin showed great courage bravery and promptitude in saving the lives of two children in a fire incident

17 Shri Kandappan Kattil Shaji
S/o Appuni, Punnamana, PO Mangalam,
Pin Code-676561, Kerala

On 7-10 1998, while in the K H M H S Alathiyur, High School Sports activity was going on, a student named Thoyyattil Mohammed Faizal studying in 10th Standard in the school accidentally fell in the nearby well On hearing the sound, many students and natives reached the spot but no one dared to jump into the well The depth of water in the well was 7 metres at the time of the incident Shri Kandappan Kattil Shaji who was watching the sports, rushed to the spot and went down the well as he knew swimming He took the boy out of the well single handedly and saved his life

2 The timely and courageous action of Shri Shaji, ignoring the risk involved in the act, saved the life of a boy from drowning

18 Kumari Leji
Villayil Veedu Palayambunnu, Ayiroor,
Thiruvananthapuram, Kerala

On 7 7 1999, Smt Usha, working as a labourer, quarrelled with her husband, Shri Rajendran and left her house leaving behind her two children Kumari Leji and Master Regin, aged 11 and 9 years respectively Furious due to his wife leaving the house, her husband Shri Rajendran threw the two children into the well at night and committed suicide by hanging The well was 11 metre deep and water level in the well was 3 metre at the time of incident Both the children did not know swimming but Kumari Legi caught hold of the step in well just above the water level with one hand She also caught hold of her brother Master Regin with the other hand and spent the whole night in the well (12 hours) She thus saved herself and her brother from drowning Next day morning a passerby named Shri Sunil heard the loud cries of the two children from inside the well He put a rope into the well and both the children came out of the well with the help of the rope

2 The courageous act of Kumari Leji and her presence of mind saved her life as well as the life of her brother

19 Shri Sabu M
S/o Muhammd Haneefa,
Manikantanttayyathu Veedu, Ezhamkulam,
Parakode PO, Adoor,
Pathanamthitta District,
Kerala

On 6 12 1999, Baby Sreekanya, three and half years old, daughter of Shri Baburaj of Ezhamkulam village, ran out from her mother's side and fell into a well near her house The well is 50 feet deep, 6 feet in diameter and was having about 12 feet water at the time of the incident As soon as the incident took place, a lot of people gathered there, but nobody dared to save the drowning child from the well At that time Shri Sabu came there and saved the child to safety

2 Shri Sabu showed courage and presence of mind in saving the life of a child from drowning in a well with utter disregard to his own life

20 Shri Shaji Varghese
Kaleeckal Veedu Thumpamon Grama
Panchayat, Thekkekkara Pandalam,
Pathanamthitta, Kerala

On 16-7-1999, Shri Podian, a labourer, was cutting the branches of a teak tree near an 11 K V electric line in which current supply was on The branch along with the labourer suddenly fell on the electric line The labourer was electrocuted and the tree branch hung over the electric line about 8 metre above the ground level The labourer became unconscious with his head downward The crowd gathered there could not do anything due to fear of electrocution At this time, Shri Shaji Varghese was passing through this accident site He immediately threw a rope on the top of the tree and climbed on the tree and tied the unconscious labourer with the rope and brought him down to the ground Thus he separated the electrocuted labourer from the lines single handedly After giving first aid, with the help of public gathered there, the victim was taken to the Hospital where he recovered

2 Shri Shaji Varghese showed courage, presence of mind and promptitude in saving the life of a person from electrocution

21 Shri Shaju @ M R Shajan
S/o Shri Rajan Mahyekkal House,
Pariyaram PO, Chalakudy (via),
Thrissur, Kerala

On 20 5 1999, a one and half year old child named Martin, accidentally fell into a well while playing with his sister The well was 7 50 metres deep and the level of the water was 2 50 metres at the time of incident His sister started shouting for help People gathered there on hearing the loud cries of the sister but no one dared to jump into the well Shri M R Shajan who was returning to his house after buying some groceries from a nearby shop noticed some people around the well He rushed to the spot and jumped into the well as he knew swimming The people who had gathered there threw a rope from above He took the child and placed him on his back Then he tied the boy with a cloth he was wearing and came over through the rope

2 Shri M R Shajan showed courage, promptitude and bravery in saving the life of a boy from drowning

22 Shri Thankappan
Nedumpallil Puliyanoor Pala
Kottayam District Kerala

On 12 9 1998 Kumari Anisha Jacob daughter of Smt Kuttiyamma Jacob, Ettackunnel fell into Puliyannor Thodu

(small river) while she was crossing through a wooden bridge. The water level below the bridge was around 4 metres at the time of incident. Smt. Kuttiyamma Jacob also jumped into the 'Thodu' to save her child but could not succeed as water level in the river was very high because of rainy season. Both of them started drowning. Shri Thankappan, who was passing by, noticed Smt. Kuttiyamma Jacob and her daughter Kumari Anisha drowning in the Thodu. He immediately jumped into the Thodu ignoring the heavy flow of water currents and the risk involved to his life and saved the lives of Smt. Kuttiyamma Jacob and Kumari Anisha.

2. Shri Thankappan showed courage and bravery in saving the lives of two persons from drowning at a risk to his own life.

23. Shri Brijesh Kumar Charmkar
Village & P.O. Khilloni, Bahiri Police Station,
Distt. Katni (Madhya Pradesh).

On 20-6-1998, Shri Brijesh Kumar went to forest for collecting "Mahua" along with his friend Shri Maru Kol. Suddenly, some bears attacked Shri Maru Kol and injured him badly. On hearing his cries, Shri Brijesh Kumar reached the site of the incident. Shri Brijesh Kumar bravely attacked the bears with stones and forced them to run away Shri Brijesh Kumar saved the life of Shri Maru Kol and brought him to the village.

2. Shri Brijesh Kumar showed courage and bravery in saving the life of a person at a great risk to his life.

24. Shri Parasram Dhananjay, Sanik No.292
Village Simrdha P.S. Samnapur Distt,
Dindori, Madhya Pradesh.

On 21.6.2000, at around 5.30 P.M. bus No. CPA-4048 of Anand Travels overturned and fell down in a Khud near Samanapur Police Station. Shri B.L. Pandey, Deputy Ranger, Forest Samnapur was trapped between the bus and a tree. He was badly injured and his both legs and hands were broken in the accident. The bus was sliding downward towards a nallah. Shri Parasram Dhananjay, who was travelling in the bus, reacted very promptly. He pulled Shri Pandey with the help of his belt in such a way that there was no danger to Shri Pandey's life. Thus Shri Parasram saved the life of Shri Pandey. In the process, Shri Parasram took considerable risk as the bus was sliding down towards the drain and there was every possibility of Shri Parasram losing his life or suffering grave injuries.

2. Shri Parasram showed great courage, bravery and presence of mind in saving the life of a person in a bus accident without caring for the risk to his own life

25. Kumari Vidya Yadav,
Vill. Gangai, P.O. Koyda,
Distt. Raipur, Madhya Pradesh.

Kumari Vidya, aged about 7&1/2 years, along with her family members was residing in a thatched hut on the bank of a river.

2. On 1.4.2000, the adult members of the family left for the watermelon lawns nearby and only children were left in the hut. Suddenly, a fire broke out in the hut The thatched hut was completely engulfed into flames and all the children were trapped in it Kumari Vidya pulled out four children out of the burning hut at great risk to her life. When she was about to pull out the last one year old child, the burning roof of the house fell down and the child died

3 Kumari Vidya showed great courage, bravery and promptitude in saving the lives of four children, despite her tender age.

26. Shri Satyendra Singh Kushwah
Amit Clinic, Etawah Road,
Phoop - 477 551, Dist. Bhind,
Madhya Pradesh

On 1.11 1999, Shri Banshilal Jain (aged 75 years) suddenly fell into the Chambal River from its 125 feet high bridge. Under the bridge the depth of water was 60 feet. Shri Satyendra Singh Kushwah, who was coming from Mainpuri (U P) with his wife Meera Kushwah on his motorbike, saw the incident He quickly stopped his motorbike on the middle of the bridge and jumped from it in the river without loosing a moment to save the person from drowning. He saved the life of the drowning person and brought him to the bank of the river by swimming across to him. He also administered the first aid to Shri Banshilal Jain and took him to Civil Hospital for treatment.

2. Shri Satyendra Singh Kushwah showed great courage and presence of mind in saving the life of an aged person from drowning without caring for the risk to his own life.

27 Shri C35 Laldawngliana
Bairabi P.S , Kolasib District,
Mizoram.

28. Shri H.C. Thanhlira
Bairabi P.S., Kolasib District,
Mizoram

On 27.7.2000 at around 3.00 p.m., Shri H C Thanhlira and C35 Laldawngliana had gone to fish and bathe in the Tlawng river about 1 km from the Bairabi Police Station in Kolasib District of Mizoram A little further up along the river, three children were also bathing in the river One of them, named Lalruatfela fell into the river When H.C Thanhlira and C35 Laldawngliana heard the children's cries for help, they ran to the site. They spotted the boy as he surfaced just once above the water Shri H C Thanhlira jumped into the river to rescue the drowning boy. He caught the boy and started to swim ashore However, on the way, he could not hold the boy and dropped him Then C35 Laldawngliana dived in and rescued both of them

2. Shri Laldawngliana and Shri H C. Thanhlira showed courage and presence of mind in attempting to save the life of a boy from drowning without caring for the risk to their own lives.

29 Master Lalramthara (Posthum
S/o Shri T Malsawma,
Keifang, Vengsang, House No 137,
Aizawl District, Mizoram

On 27 4 1998, the Venghlui Sporting Club ventured out on a picnic at Tamdil Lake and Master Lalramthara aged 12 years, was also with this group At around 11 00 A M when the boys and girls were happily wading on the banks of the lake, Ms R Vanlalheli suddenly slipped into the water The lake has a diameter of half kilometre and a depth of 8 to 15 metres At this time, Master Lalramthara, who was standing nearby, jumped into the water to save his friend, being a good swimmer When Master Lalramthara reached near the drowning girl, the panic stricken girl grabbed him and clung to him She was unable to keep afloat and went under the water When the onlookers on the bank of lake realized that Master Lalramthara was unable to save her, they pushed a bamboo pole towards them The girl got hold of the bamboo pole but Master Lalramthara became so weak in the hectic struggle that he did not have the strength to grab the bamboo Since none of his friends on the bank could swim, he drowned before help could be summoned

2 Thus, Master Lalramthara, in an attempt to save the life of Ms R Vanlalheli, made the supreme sacrifice of his life

30 Shri Lalrinnunga (Posthumous)
Mualpheng Mizoram

On 25 1 2000 Shri Vanlalchhunga and his drivers Shri Lalrinnunga and Shri Thanga were on their way to Lawih to lift some load On the way, they came upon an electric post whose strayed wire was broken by a fallen tree and the wire was strewn on the road They stopped the vehicle and Shri Thanga got down to remove the wire He didn't know that the wire was live with electric current flowing through it

2 As soon as Shri Thanga touched the wire, he was paralysed by the strong current Shri Vanlalchhunga tried to pull Shri Thanga free from the wire but the current surging through the body of Shri Thanga threw him away Then Shri Lalrinnunga rushed to Shri Thanga and fearing that he may again be thrown away by the current, embraced him and tried to pull him free Though Shri Lalrinnunga was also being electrocuted, he didn't let go of his friend and tried to pull him free till his last breath

3 Shri Lalrinnunga made the supreme sacrifice of his life in an attempt to save his friend

31 Shri R D Thanchungnunga
S/o R D Hrangkima,
Kawnveng, Thingdawl,
Kolasib District, Mizoram

Shri R D Thanchungnunga had gone to camp at his jhum at Bawngzau (near Thingdawl village in Kolasib District, Mizoram) along with two friends, Vanlalvuana and Malsawma On the sixth day, i e 31 7 2000, they ventured into the neighbouring hill forest to collect bamboo shoot and plantain flowers for food On the way Malsawma lagged behind since he was tired, and the other two went ahead As the two friends proceeded into the bamboo forest, they were suddenly attacked by a full grown bear As Vanlalvuana tried to run for safety the bear snapped at the strap of his bag and pounced upon him scratching his face twice As the bear opened its mouth to bite him, Shri Vanlalvuana stuck his fist into the bear's mouth which the bear bit Meanwhile, Shri R D Thanchungnunga took out his dhao and, pouncing upon the bear, hacked the bear's head with all his might After he hacked the bear's head about seven or eight times, the bear released his friend and retreated into the jungle By that time, Malsawma also joined his friends and immediately ran to the Thingdawl village to get help, while Shri R D Thanchungnunga stayed behind to nurse his friend After about 4 to 5 hours, the villagers arrived and carried Vanlalvuana home on a makeshift bamboo stretcher

2 Shri R D Thanchungnunga showed courage and presence of mind in saving the life of his friend from a bear's attack with utter disregard to his own life

32 Shri Prem Singh Champawat
S/o Shri Viradsingh Champawat,
Village Didas, Teh Sivana,
Distt Barmer, Rajasthan

On the morning of 21 5 2000, one wild bear entered the Dudada village and injured 7-8 persons of Dudada and Rampura village in District Jodhpur After that, the bear reached Didas village on the border to District Jodhpur and Barmer and started attacking and creating terror among the villagers Shri Prem Singh Champawat, resident of Didas village, started fighting with the bear without caring for the risk involved to his own life Although he was badly injured, he continued to fight with bear with the result that the bear was frightened The bear tried to escape but was beaten to death by Shri Prem Singh with the help of other villagers

2 Shri Prem Singh showed great courage, promptitude and presence of mind in saving the lives of a number of villagers from the attack of a wild bear

33 Shri Puneet Khadyat (Posthumous)
Village & P O Saat Shillong, Tehsil &
District - Pithoragarh

On 5 9 1998, Shri Puneet Khadyat saw his fellow student Shri Janak Singh drowning in the pond He immediately jumped into the pond and saved the life of Shri Janak Singh, but in this process he was drowned in the pond

2 Shri Puneet Khadyat showed great courage care for others and saved the life of his friend from drowning and made the supreme sacrifice of his life in the process

34 Shri Amit Kumar,
S/o Shri Jaswant Ram,
New Raj Bhawan,
Out House,
Taali Taal, Nainital,
Uttar Pradesh

35 Shri Balam Singh
S/o Shri Hira Singh,
New Raj Bhawan,
Out House,
Taali Taal, Nainital,
Uttar Pradesh

36 Shri Prakash Tamta
S/o Shri Deva Ram Tamta,
New Raj Bhawan, Out House,
Tali Tal, Nainital
Uttar Pradesh

On 15 11 1999, four students of 11th class from Sherwood College, Nainital slipped from the Lover's Cliff mountain In this incident, one of the four boys Shri Arpit Aggarwal died on the spot and other one, Shri Sunil Joshi was seriously injured The remaining two boys were trapped between the steep slope of the mountain

2 Shri Amit Kumar, Shri Balam Singh and Shri Prakash Tamta rescued the trapped boys at great risk to their lives and also brought up the dead body of the boy

3 Shri Amit Kumar, Shri Balam Singh and Shri Prakash Tamta showed great courage and presence of mind in saving the lives of two boys at a great risk to their lives

37 Master Manish Kumar Yadav
Village - Kanholi,
PO Muftiganj,
P Station Karakat,
District Jonpur,
Uttar Pradesh

On 17 10 98, at around 3 30 P M Master Deepak Kumar Yadav, aged three and half years fell down in the well while playing The depth of water in the well was around 18 feet On seeing this, Smt Sudama, who was with the child, shouted for help and a number of persons gathered there but no one dared to save the life of the drowning boy Meanwhile, Master Manish Kumar Yadav came there and immediately jumped into the well He brought out the drowning boy from the well and saved his life

2 Master Manish Kumar Yadav showed great courage, bravery and promptitude in saving the life of a boy from drowning without caring for the risk to his own life

38 Kumari Manju Arya
Village - Bhakun Khola,
PO - Bajnath,
District - Bageshwar,
Uttar Pradesh

On 4 7 1999, Shri Lagaya Bhutia Sr Field Officer of SSB Gawadam Unit, and his fellow reporter Shri Miniketan Raj Brayli, were swimming in the river Gomti in district Bageshwar Shri Lagaya Bhutia drowned in the river and Shri Miniketan Raj Brayli also started drowning Kumari Manju Arya, a class IX student saved Shri Miniketan from drowning She also tried to save Shri Bhutia but could not save him

2 Kumari Manju Arya showed courage bravery and promptitude and saved the life of a person from drowning at great risk to her life

39 Kumari Vineeta,
Village & PO Pareva
District - Champawat,
Uttar Pradesh

On 12 4 99 a terrible fire broke out in the cow shed of Shri Bhagwan Singh in village Pareva The cow shed was gutted totally and one ox was burnt to death immediately One cow and calf were severely burnt and died within 4 5 days The fire also engulfed the adjacent house of Shri Bhagwan Singh No adult member was present in the house at that time Six children all under 10 years were present in the house Kumari Vineeta, one of the six children brought out all the children without caring for the fire flames and led them to nearby fields Thus she saved the lives of all the children She also shouted for help On hearing her shouts, the villagers gathered and put off the fire and saved the other adjacent houses from burning

2 Kumari Vineeta showed courage promptitude and presence of mind in saving the lives of five children in a fire incident at a great risk to her own life

40 Master Barati Lal Sen
Durga Bazar, Bande Uttar Pradesh

On 8 1 1999 one and half year old son of Shri Ram Babu Gupta suddenly fell in a well The depth of well was 80 feet On hearing the cries of the child a number of persons gathered near the spot but no one dared to enter the well At that time one Master Barati Lal Sen was passing by He immediately realised the seriousness of the situation and jumped into the well without caring for the risk to his own life He managed to bring out the child and saved his life Master Barati Lal Sen suffered some injuries in the process

2 Master Barati Lal Sen showed courage and bravery in saving the life of a boy from drowning at a great risk to his own life

41 Master Subhash Chander
Village Baala PO Khotali,
District Champavatt

On the evening of 14 10 98 a fire broke out in the house of Shri Vishnu Dutt Bhatt At that time no adult member of the family was present in the house Two children Master Manoj aged 5 years and Kumari Neema 2 and half years

old, were present in the house. On seeing the fire, Master Manoj came out of house but Kumari Neema could not come out and got trapped inside. Meanwhile, their brother, Master Subhash Chander came back from the forest and saw that his sister was trapped inside the house. He immediately ran inside the house and brought her out of the house and saved her life.

2. Master Subhash Chander showed courage, bravery and promptitude in saving life of his sister in a fire incident.

42. Shri Cheeriyakoya, B.S.
Steno typist, Sports, Lakshadweep Office,
Willingdon Island, Kochi-3.

On 30.4.2000, during embarkation of tourists at Kalpeni Island, in a ship, Mrs. Jessy Rapai, a tourist from Kerala, accidently fell into the sea in between ship and country craft. Her life was in danger as she did not know swimming. While several others were watching the accident, Shri Cheriyakoya, a steno typist, sports, Lakshadweep Office temporarily posted as Manager to look after the welfare of the tourists on board the vessel, jumped into the sea without losing any time, and saved her life. The saving of a person who has fallen between a ship and another craft is dangerous. In spite of the risk involved, Shri Cheriyakoya jumped into the sea and saved the life of the tourist without caring for his life.

2. Shri Cheriyakoya showed courage and bravery in saving the life of a person from drowning at risk to his own life.

43. Sub Lieut Dhruv K Tiwari (04862-Z)
INS Mysore
C/o FMO Mumbai.

On the night of 6th/7th August 2000, Sub Lieut Tiwari was dining at a restaurant overlooking the waterfront in Lisbon, Portugal. A US Navy sailor of USS Dwight D. Eisenhower accidentally fell into the water through an open window of the restaurant. The falling sailor's head hit the side of a tugboat secured alongside, rendering him unconscious and bleeding profusely from a head injury. S. Lt. Tiwari, with total disregard to his own personal safety, reacted instantly and jumped into the fast flowing cold waters adjoining the restaurant. He took hold of the unconscious sailor, who was on his way down to the bottom of the river, and pulled him to safety. Thereafter, S.Lt. Tiwari administered first aid to the sailor to control profuse bleeding from his head, and remained with him till an ambulance arrived. But for the gallant act of S, Lt. Tiwari, the sailor would have lost his life.

2. Sub Lieutenant Tiwari showed courage and presence of mind in saving the life of a US Navy sailor with utter disregard to his own personal safety.

44. Shri RNS Yadav, CPOR (Tel) No. 112488-F
INS Krishna C/o FMO Kochi.

On 1st March, 2000, INS Krishna was berthed alongside Finger Jetty berth N9. About eight dockyard workers were disembarking stores from the ship's helo deck to the jetty. One of the dockyard workers, while directing the crane, slipped from the edge of the jetty and fell into the sea. The rest of the workers gathered at the edge of the jetty and started looking down at the struggling worker, who was a non-swimmer. None of them could pick up courage to jump into the sea; instead they started shouting for help. Hearing their cries for help and immediately realising the need to rush, RNS Yadav, CPOR (Tel) ran from the gangway towards the scene. Without thinking about his own safety and showing promptness, the sailor jumped into the sea and saved the life of the worker. The entire incident was witnessed by Lt. Amit Nagpal, who happened to be in the vicinity at the time of the incident.

2. RNS Yadav, CPOR (Tel) showed courage and presence of mind in saving the life of a person from drowning.

45. Shri Virender Singh, SEPOY (No. 3996747)
Dogra Scouts, C/o 56 APO

On 02.10.1999 at 6.35 p.m. the sentry at the post of 'B' Company, Dogra Scouts located at Khuddi Village observed that a house was on fire. He immediately informed his officiating Company commander. A Team was rushed to the spot. Sepoy Virender Singh, who was part of the party, saw two children named Sajid Ahmad aged 11 years and Rasyasit aged 6 years trapped inside the burning house. The fire was spreading and the villagers were dumbstruck spectactors only. Sensing the acute danger to the lives of both the children, Sepoy Virender Singh moved into the burning house alongwith an officer and managed to extricate both the children, who had suffered 40% to 50% burns. In the process Sepoy Virender Singh also suffered burn injuries on the face and neck. Despite his own injuries, the Sepoy actively participated in controlling the fire and preventing it from spreading to the nearby Government building.

2. Sepoy Virender Singh showed conspicuous bravery in saving the lives of the children and loss to Government property at a great risk to his own life.

46. Shri Keshar Singh Driller No. OS-117885-L,
155 Formation Cutting Platoon Care,
116 Road Construction Company (GREF),
C/o 99 APO.

On 10.7.2000 at about 1300 Hrs. Driller Keshar Singh was drilling holes with his machine for blasting of rock when he heard an alarm raised by Overseer Mohan Singh, incharge (works) of that sector. Shri Keshar Singh immediately switched off the drilling operations and noticed Overseer Mohan Singh and DES Karan Singh getting swept into the deep valley by a huge rolling boulder. Shri Keshar Singh immediately mustered other co-workers and negotiated the steep rocky hill towards the valley, which was still subjected to rolling mass of disintegrated boulders, to rescue Overseer Mohan Singh and DES Karan Singh, risking his own life. With utter disregard to his personal

safety, Shri Keshar Singh reached the spot and immediately made improvised stretchers and evacuated both Overseer Mohan Singh and DES Karan Singh to the road-head by climbing the steep rocky hill. The timely rescue by Shri Keshar Singh enabled early evacuation of both the victims by helicopter to Military Hospital Dinjan for further treatment.

2. Shri Keshar Singh showed courage, sincerity and promptitude in saving the lives of two persons in an accident ignoring risk to his own life.

47. Shri Martin Barjo CPL (T. No. 55357),
155 Formation Cutting Platoon Care,
116 Road Construction Company (GREF),
C/o 99 APO.

On 10.7.2000 at about 1300 Hrs, Shri Martin Barjo CPL was assisting Driller Keshar Singh, in drilling operation with his machine for blasting of rocks. They suddenly heard an alarm raised by Overseer Mohan Singh, incharge (works) of that sector and immediately stopped the drilling operation and saw Overseer Mohan Singh and DES Karan Singh falling into the valley alongwith rolling mass of rocky boulders. Shri Martin Barjo displayed his presence of mind and alongwith Shri Keshar Singh made an improvised stretcher with gunny bags and went down the steep rolling hill towards the valley side which was still being subjected to rolling mass of disintegrated boulders to rescue Overseer Mohan Singh and DES Karan Singh. Shri Martin Barjo reached the spot despite the sliding mass of boulders and rescued both Overseer Mohan Singh and DES Karan Singh to road-head by climbing the steep rocky hill The timely rescue by Shri Martin Barjo enabled the immediate administration of first aid to both the victims. Subsequently, both the victims were evacuated by helicopter to Military Hospital Dinjan for further treatment.

2. Shri Martin Barjo showed sincerity, courage and presence of mind in saving the lives of two persons in an accident.

48. Master Aashish Kumar,
C/o Shri Ramji Prasad,
Mohalla Koeribari, Gali No. 1,
Nadraganj, Dist. Gaya (Bihar) - 823 001.

49. Master Prince Kumar,
C/o Shri Ramji Prasad,
Mohalla Koeribari, Gali No. 1, Nadraganj,
Dist. Gaya (Bihar) - 823 001.

On 5th November 1999 at around 11.30 a.m., Shri Ramji Prasad and his son Master Aashish Kumar were returning home from their shop. As they entered their lane, they noticed two strangers starting at them. Hastening their steps, they headed towards their house and pressed the door bell. As soon as Master Aashish's younger brother, Master Prince Kumar, opened the door, the two rushed inside. As Master Aashish tried to shut the door behind him, 8-10 armed men forced their way in. Seeing this, their father ran to the second floor of the house and raised an alarm The robbers placed a revolver at Master Aashish's temple When the boy tried to resist, four-five robbers gave repeated blows to him As seriously injured Aashish fell on the ground, Master Prince Kumar pounced on one of the miscreants He placed his hands on the robber's neck and bit him with his teeth Just then, another robber kicked Master Prince and delivered belows on him Master Prince, however, did not let him go All of a sudden, the robbers fired at Master Aashish but the shot misfired They then aimed at Master Prince The bullet hit the boy in his back Then hurling a bomb at him they started running The bomb, however, exploded about five metres away from Master Prince As the explosion blurred the boy's vision, the miscreants escaped Master Prince and Master Aashish were later taken to hospital by their father Master Prince was operated upon two days later to remove the bullet from his back

2 Master Aashish Kumar and Master Prince Kumar showed bravery in fighting with the robbers and foiled the robbery attempt at a great risk to their own lives.

50. Master Abdul Majid,
C/o Shri Mohd. Ramzan, Lamberi Mohra Tialla,
P.O. Lamberi, Teh Nowshera,
Dist Rajouri (J&K) - 185 152

On 25 12.1998, four armed militants entered Mohd Zabir's house The terrorists threatened the inmates of the house as well as the neighbours and ordered them not to move. Seeing this, Master Abdul Majid, who lived in the neighbourhood, picked up his books and, giving the militants the slip, ran to the STF Post Lamberi On hearing about the incident from Master Abdul, the STF rushed to the spot and cordoned off the area. A fierce encounter ensued between the forces and the militants in which three militants were killed and a number of arms and ammunition was recovered.

2. Master Abdul Majid showed courage and presence of mind in saving the lives of some persons and helped in killing three militants at a great risk to his own life

51. Master Binod Nongrum (Posthumous)
C/o Smt. Gopi Nongrum
Forest Colony, Polo,
Shillong-793 001, Meghalaya

On 18th September, 1999 at around 10 00 a m , Master Binod Nongrum alongwith five other boys had gone to Spread Eagle Falls to wash clothes On reaching there, they discovered that there was no place for washing at their regular spot. Hence, they went a little upstream and sat to wash their clothes just above the Falls After some time, one of the boys, Master Vikash Thapa, went to wash his feet near the edge of the Falls and accidently slipped inside Seeing this, Master Binod Nongrum rushed to his friend's rescue. Catching hold of his hand, he tried to pull Master Vikash out Unfortunately, both the boys fell into the stream While Master Vikash managed to grab some grass for support, Master Binod was swept away by the strong current Master Vikash and his friends tried to save Master Binod but their efforts were in vain and Master Binod lost his life in the incident

2 Master Binod Nongrum showed courage and promptitude in making an attempt to save the life of a boy and made the supreme sacrifice of his life in the process

52 Kumari Chanduba
Dholavira Tal Bhachau, Gandhidham Co-Operative Bank, Gandhidham,
Dist Kutch, Bhuj, Gujarat

On 30th June, 1999, Shri Sardarsinh, watchman of a Co-operative Bank at Gandhi Dham was sleeping in the compound of the Bank along with his nephew Dhirubha and daughter Chanduba At around 2 00 a m four robbers armed with tamancha, revolver and an iron rod entered the Bank premises and woke up Shri Sardarsinh and Dhirubha and demanded the bank keys On being informed by Shri Sardarsinh that he did not have the bank keys, the robbers tied their hands behind them with a rope and shut them up inside the toilet The robbers then proceeded towards the rear side of the bank and tried to break the grill of a window with the iron-rod Meanwhile Shri Sardarsinh managed to get his hands free with the help of his nephew As Shri Sardarsinh shouted for help, two of the robbers opened the toilet door and one of them fired at Shri Sardarsinh However, the bullet went above his head The miscreant then inflicted blows on the chowkidar's head and elbow with the iron rod The commotion awakened Kumari Chanduba Noticing the two men grappling with her father and her cousin, Kumari Chanduba rushed towards the gate and shouted for help Hearing the noise, the robbers shut the toilet door and headed towards the gate Seeing this, Kumari Chanduba ran towards the toilet and opened the door Meanwhile her cries brought the neighbours and some other persons to the premises All the four robbers were nabbed by the policemen patrolling the area

2 Kumari Chanduba showed bravery, promptitude and presence of mind in saving the lives of her father and her cousin and foiled a robbery attempt at great risk to her own life

53 Master Hanboklang Nongsiej
C/o Shri Ni Nongrum, Pongkung,
B P O Pongkung, Via Mawphlang 793 121,
W K Hills, Meghalaya

On 5-1-2000, Shri Raw Nongsiej's house caught fire while his wife, Smt Kharbani was working in the field Their nine month old child was inside the house at that time Seeing the blaze, Smt Kharbani screamed for help Master Hanboklang Nongsiej barged into the house and braving the flames, brought the baby out safely The house and its belongings were completely gutted in the fire

2 Master Hanboklang showed courage and bravery in saving the life of a nine month old child in a fire incident without caring about his personal safety

54 Kumari Heena Bakshi
C/o Lt Col P Bakshi
372/1 B S Enclave,
Ambala Cantt-133 001 Haryana

On 3rd August, 1999, in the early hours of the morning three intruders entered Lt Col Bakshi's house by breaking the grill of the drawing room window while the Bakshi's were asleep One of the intruders sneaked into the bedroom where Kumari Henna and her brother were sleeping Kumari Henna woke up, as the thief switched on the light, Henna pretended to be fast asleep The burglar tried to open the steel almirah in the room When his efforts failed he left Henna's bedroom to enter the adjacent room where her parents were sleeping Kumari Henna quickly followed him and raised an alarm Her cry awakened her father Before Lt Col Bakshi could react, the thief tried to escape However, Kumari Henna caught hold of him at the door The burglar raised an alarm to warn his accomplices and pushed Henna away He had just managed to reach the main entrance of the house when Lt Col Bakshi overpowered him The burglar was handed over to the police and later on his accomplices were also caught

2 Kumari Henna showed presence of mind and promptitude in foiling a burglary attempt

55 Master Kumbharam Meena
S/o Shri Inderraj Meena,
Village Sikroda Jat, Teh Hindan,
Dist Karauli-322 230 Rajasthan

On 27-09 1999, Master Kumbharam Meena was on his way to school As he crossed the railway track between Shri Mahaviriji and Hindon railway stations, he noticed that a part of the track was broken Without wasting any time Master Kumbharam ran the three kilometre distance towards the Shri Mahaviriji railway station and informed the railway cabin man The cabin man in turn, informed the Station Master As the Mumbai-Delhi Rajdhani Express was due to pass from there in a short while, the Station Master at once put the signal down The train stopped at a safe distance from the damaged track and the track was repaired The train left an hour after the track was repaired

2 Master Kumbharam Meena showed presence of mind and promptitude and saved the lives of a number of passengers by averting a train accident

56 Master Laishram Uttamkumar Singh
C/o Shri Laishram Dilipkumar Singh
Langthabal Kunj, Mayai Leikai,
Canchipur-795 003 Manipur

On 16 11 1999 the villagers of Langthabal Kunja were out in their paddy fields At around 3 00 p m Master Laishram and his friend Master Ningthoujam Beigyachandra Singh were returning home with the straw On the way, they saw a hen They put down the straw and started chasing the hen in an effort to catch it While they were running, Master Bheigyachandra accidently touched a partition wire-nut that had fallen from a straw shed He was instantly caught in the grip of an electric current and fell down unconscious Seeing this Master Laishram ran towards his friend As he touched Master Bheigyachandra Master Laishram was thrown off balance by the electric current

Master Laishram wrapped his hand with the small towel used for carrying the straw and dragged Master Bheighyachandra with his hands He thus succeeded in separating the victim from the charged wire net Then, he ran to the nearby de addiction centre to get help The medical team of the centre rushed to the spot and managed to revive Master Bheigyachandra with first-aid

2 Master Laishram showed bravery, presence of mind and courage in saving the life of his friend from electrocution at a great risk to his own life

57 Master Laukik Rajeev Bhatkar
C/o Sh Rajeev Bhatkar Matru Pitruchaya
Bunglow, Middle Class Society, Flat-13,
Panvel, Dist Raigad-410206, Maharashtra

On 6th September, 1999 at around 4 00 a m , two thieves entered Shri Rajeev Bhatkar's house by breaking the lock of the back door Just then, his son, Master Laukik Bhatkar woke up and noticed that the back door was open He thought that his mother had probably forgotten to lock it the previous night He went forward to close it Suddenly, one of the thieves who was hiding in the kitchen, fled His companion flashed a torch on Master Laukik's face Master Laukik, however, caught him and while grappling with him, raised an alarm His cry woke up his parents As his mother came forward, the burglar hit her with a screw driver and knife and injured her Her husband, however, managed to catch hold of the thief and handed him over to the police The burglar also returned the cash (Rs 4,600/-) he had stolen from the house

2 Master Laukik showed courage and bravery in foiling a burglary attempt at a great risk to his own life

58 Master P Thirumalai
15 A, Krishnan Street,
West Mambalam, Chennai 600033
Tamil Nadu

On 5th August, 1999, Master P Thirumalai was returning from school on his cycle On the way, he stopped at a cycle repair shop to fill air in his cycle Just then, a bus hit a boy coming from the opposite direction on a cycle With the impact, the boy was thrown off the cycle and fell under the bus and his leg was entangled in its wheel Panic-stricken, the bus driver fled Seeing this, Master Thirumlai chased him on his cycle for some distance His effort, however, was in vain Then, hearing the cries of the victim, Master Thirumalai returned to the accident site He extricated the boy from under the wheel of the bus, single-handedly The boy was bleeding profusely from injuries on the leg and head Being a Junior Red Cross student and knowing first aid, Master Thirumalai bandaged the victim s leg with his handkerchief He then tried to carry him in an attempt to get medical attention for him Not being very sturdy, however, he was unable to lift the injured boy He, therefore, requested passersby for help While the others declined, a college student came forward and helped Master Thirumalai to take the victim to a nearby hospital where he was given treatment

2 Master Thirumalai showed promptitude and courage in saving the life of a boy in a bus accident

59 Kumari Parul Mishra
C/o Shri Vijay Kumar Mishra,
491/7, Munshiganj, Daligang,
Lucknow-226 020, Uttar Pradesh

On 22-12-1999, Kumari Parul was playing with her friend Priyanka Priyanka's father had just roasted some rice and put the hot ash outside the kiln Priyanka noticed the ash and went to collect some ash to wash her doll's utensils As Priyanka tried to pick up the ash, she fell on the live coal As Priyanka screamed for help, Kumari Parul headed towards her Barely realising the gravity of the situation, she walked on the hot ash, held up Priyanka and raised an alarm Kumari Parul's rubber slippers had already melted by then Hearing their cries, Ravi, who lived nearby, rushed to the site and pulled them out Both the girls were then taken to hospital for treatment Priyanka underwent treatment for nearly four months for her burn injuries, while Kumari Parul had to undergo plastic surgery on her feet

2 Inspite of her tender age, Kumari Parul showed courage and presence of mind in her attempt to save the life of her friend at a great risk to her life

60 Master Prince V Dominic
C/o Shri K V Dominic Vypana House
Arunapuram P O Pala,
Kottayam District 686 574, Kerala

On 24 7-1999, Shri K V Dominic had gone out of station His wife and son, Master Prince Dominic were asleep at night At around 3 30 a m , Smt Dominic heard the sound of a window breaking Listening intently, she heard someone moving in the adjacent room She woke up Prince Both of them went and stood at the inter-connecting door between the two rooms Smt Dominic flashed a torch on the intruder's face Taken aback, the thief stood still for a few moments Taking advantage of the situation, Master Princeheld him from behind As the burglar could not free himself from Prince's hold, he dragged the boy with him towards the spot where he had left his tools Master Prince, however, pinned him to the ground and held him there Meanwhile, Smt Dominic called out to the neighbours for help With their assistance, the burglar's hands were tied and he was later handed over to the police

2 Master Prince showed courage and bravery in foiling a burglary attempt without caring for his own life

61 Master Reuben Lamiaki Kynta
C/o Shri Evans Rynjah Solomon
#2, Lyndhurst Estate, Upper New Colony
Laitumkharah, Shillong 793003-Meghalaya

On the afternoon of 18 April 2000, Master Reuben Kynta was walking back home from the bus stop when he was bitten by a mad dog in his right ankle Running ahead the dog then bit one Smt Rajbhangshi on her leg and immediately

thereafter bit another lady Smt Lyngdoh on her ankles. While trying to shoo away the animal, Smt. Lyngdoh fell down and the dog then started biting her all over. She screamed for help. As passers-by watched helplessly, Master Reuben ran to the spot to help her. He pulled the animal away from the old lady by grabbing both its jaws Then, pinning the dog down, Master Reuben started strangling it and after a struggle of nearly 10 minutes, Master Reuben succeeded in killing the animal Master Reuben then rushed the two women to the hospital in a taxi to get them and himself injected with anti-rabies vaccine Thereafter Master Reuben escorted both the women home

2 Master Reuben showed great courage and promptitude in saving the lives of two ladies in an encounter with a mad dog at a great risk to his own life

62 *Master Satyanarayan Bairagi*
C/o Shri Kamta Prasad Bairagi,
Village Lodipura, Post Barkheda,
Dist. Rajgarh-465 674, Madhya Pradesh.

On 30-09-1999, Kumari Gedibai, aged 18 years and her friend Kumari Guddibai, aged 15 years had gone to the local well to bath. While they were taking bath, suddenly Km Guddibai started drowning As Gedibai tried to save her friend she also started drowning. Both the girls did not know swimming. Hearing their screams, Master Satyanarayan Bairagi, who was cutting wood nearby, rushed to the site. He jumped into the well to save the lives of the two girls without caring for his own life and succeeded in bringing out both the girls safely

2. Master Satyanarayan showed bravery and promptitude in saving the lives of two girls from drowning at a great risk to his own life.

63. Master Tator Pertin
C/o Shri Tagum Pertin, Vill. Sille,
P.O Sille, Via Pasighat-791 102,
Dist East Siang, Arunachal Pradesh.

On 29-12-1999 at noon, Master Tator Pertin, had gone to collect honey along with five other persons. As they had forgotten to bring straw, Master Tator Pertin went in search of it. A little distance away, he heard some children crying. As he headed in that direction, he saw a hut engulfed in flames. Master Tator Pertin and his companion T Boje rushed to the spot. Master Tator entered the hut and succeeded in bringing out two children aged six years and three and half years and thus saved their lives His companion also brought out a seven year old child and saved his life. As soon as they stepped out, the hut collapsed. The children were handed over to their parents who reached the spot a short while later

2. Master Tator Pertin showed bravery and promptitude in saving the lives of two children in a fire incident without caring for risk to his own life.

64. Master Vishnu Vilas Pavithran
C/o Shri Pavithran C M.,
Chemmanaparampil, Parathode P O ,
Kottayam District-686 512, Kerala

On 26-7-1999 at around 6.00 p m , Shri Pavithran and his wife had gone to fetch water from a stream Their two children, Master Vishnu and Kumari Lakshmi were at home Master Vishnu was studying by the light of a kerosene lamp in the kitchen As the house was in a rubber plantation, it was already dark inside His three and a half year old sister Laxmi lit another kerosene lamp and sat near Vishnu to read a magazine. All of a sudden, her frock caught fire from the lamp. Panic-stricken, she started screaming and running around in the room Master Vishnu held her and tried to extinguish the fire with his hands. As his effort proved futile, he held Lakshmi firmly and dragged her down to the ground He then made another attempt at extinguishing the fire and succeeded this time

2. Meanwhile a lighted kerosene lamp fell down and the kerosene spilled out Seeing that the fire had started spreading, Master Vishnu ran to the kitchen and used a pot of drinking water to put out the fire

Master Vishnu burnt his cheek while Lakshmi received minor burn injuries on her shoulder. Both the children were later given treatment for their burns.

3. Master Vishnu showed courage, promptitude and bravery in saving the life of his sister in a fire incident.

BARUN MITRA
Dy. Secy to the President

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
(DEPARTMENT OF SECONDARY EDUCATION & HIGHER EDUCATION)
(UNESCO UNIT)

New Delhi, the 23rd March 2001.

RESOLUTION

No. F27-38/96-UU—In terms of sub-sections (1) and (2) of the Section 21 of Chapter III of the Auroville Foundation Act, 1988 and in continuation of Resolution of even number dated the 17th December, 1997, the Government of India hereby nominates Mr Bernard F de Montferrand, Ambassador, Embassy of France, New Delhi as member of the International Advisory Council in place of Prof Amartya Sen who has resigned.

2. The term of Office of Mr. Bernard F de Montferrand will be for the remainder of the term of the Council i.e. till 16th December, 2001

ORDER

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

ORDERED also that a copy of the Resolution be communicated to Auroville Foundation, Bharat Nivas, Auroville-605101, V.R.P. District, Tamil Nadu and Mr Bernard F de Montferrand, Ambassador, Embassy of France, New Delhi.

C BALAKRISHNAN
Jt Secy.

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित
एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 2001